



04 - लालित्य शरण
व्रज- सांस्कृतिक
यात्रा पर ले जाती



05 - भारतीय चित्रकला
में रवि वर्मा का स्थान

A Daily News Magazine

इंदौर
रविवार, 26 अप्रैल, 2026



इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 203, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रु. 2



06 - बाबा साहब का
जीवन संघर्ष, शिक्षा
और आत्मसम्मान...



07 - बॉक्स ऑफिस
पर डेर, दिग्गजों
के सपने

सुबह

subhasaverenews@gmail.com
facebook.com/subhasaverenews
www.subhasavere.news
twitter.com/subhasaverenews

सुप्रभात

जल है तो कल है
आज सिर्फ छल है
छल में ही बल है
गुमसुम कलकल है

रीते हैं घट और
सूना पनघट है
तपती डगर डगर
झूलसा शहर है

बोतल में नीर है
बाजार बगलगीर है
माथे पसीना और
कंठ चूभता तीर है।

- सुरेश उपाध्याय

जहांगीर महल ओरछा



इसे 17वीं सदी में बुंदेला शासक राजा वीर सिंह देव ने मुगल बादशाह जहांगीर के स्वागत में बनवाया था। बेतवा नदी के तट पर स्थित यह महल, बुंदेला और मुगल वास्तुकला के मिश्रण का बेहतरीन उदाहरण है।

फोटो- महेश मुद्गल

भारत का विश्वगुरु बनना निश्चित है: संघ प्रमुख भागवत

- आरएसएस चीफ बोले- देश के भविष्य पर संदेह न करें
- कहा- राम मंदिर बनने को लेकर भी लोग शक करते थे

नागपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयं सेवक प्रमुख मोहन भागवत ने कहा है कि भारत निश्चित रूप से विश्वगुरु बनेगा और इस पर किसी को संदेह नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि एक समय था, जब लोग अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर के निर्माण को लेकर संशय में रहते थे। इसे असंभव मानते थे। लेकिन आज वह मंदिर सबके सामने साक्षात् खड़ा है। ठीक उसी प्रकार, भारत का विश्वगुरु के रूप में पुनरुत्थान भी पूरी तरह निश्चित है और इस यात्रा को रोका नहीं जा सकता। भागवत ने यह बात नागपुर में नेशनल कैम्प इंस्टीट्यूट

परिसर में बनने वाले भारत दुर्गा शक्ति स्थल मंदिर के भूमि पूजन कार्यक्रम में कही। इस मौके पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, स्वामी मित्रानंदजी महाराज, साध्वी ऋतंभरा और धीरेन्द्र शास्त्री सहित कई धार्मिक नेता भी मौजूद थे। आरएसएस चीफ ने कहा- देश के भविष्य को लेकर कोई संदेह न रखें और साहस व आत्मनिर्भरता के साथ जीवन जिएं। उनके मुताबिक, अगर लोग अपने संकल्प के अनुसार कदम-दर-कदम आगे बढ़ें, तो भारत मजबूत और सशक्त बनेगा।



पश्चिमी सोच को त्यागकर भारतीय परंपराओं से जुड़ें

आरएसएस प्रमुख ने नागरिकों से पश्चिमी सोच को त्यागने और विचार एवं व्यवहार में भारतीय परंपराओं से दोबारा जुड़ने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन दैनिक जीवन में छोटे, लेकिन सार्थक बदलावों से शुरू होगा, जैसे कि भाषा, पहनावा, खान-पान की आदतें और सांस्कृतिक प्रथाएं। भारत को जानना, स्वीकार करना और दैनिक जीवन में जीना जरूरी है। इस बात पर जोर देते हुए कि आत्म-साक्षात्कार की ऐसी प्रक्रिया के माध्यम से ही एक मजबूत और आत्मविश्वासी भारत की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है।

सात सांसद तो झांकी हैं असल 'खेला' बाकी है



● पंजाब के लिए बीजेपी ने फरवरी में ही बिछा दी थी बिसात नई दिल्ली (एजेंसी)। राघव चड्ढा समेत आम आदमी पार्टी के 7 राज्यसभा सांसदों ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। इन सांसदों का बीजेपी में शामिल होना कोई हेरानी की बात नहीं है, क्योंकि पिछले कुछ महीनों से ऐसा माहौल साफ दिखाई दे रहा था कि ये सभी सांसद कुछ ऐसा कदम उठा सकते हैं। पार्टी में शामिल कराने के लिए बीजेपी को सिर्फ समय तय करना था। शुक्रवार को जब राघव चड्ढा, संदीप पाठक और अशोक मित्तल ने कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया, तो वहां पर बीजेपी नेताओं की मौजूदगी से तभी स्पष्ट हो गया था कि यह कदम सोच-समझकर लंबी रणनीति के तहत उठाया गया है।

पश्चिमी चश्मे को उतार फेंकने की जरूरत

डॉक्टर भागवत ने कहा कि भारत को यदि वास्तव में समझना है, तो इसे इसकी अपनी सभ्यता और सनातन मूल्यों की दृष्टि से देखना होगा। उन्होंने कहा कि पिछले 150 वर्षों में विकसित हुई पश्चिमी सोच से भारत को नहीं समझा जा सकता। नागरिकों को इस विदेशी विचारधारा की परतों को उतार फेंकना होगा। यदि हम अपने संकल्प के अनुसार कदम दर कदम आगे बढ़ें, तो भारत मजबूत, सदाचारी और वैश्विक मार्गदर्शक बनेगा। भागवत ने कहा कि भारत को सही मायने में समझने के लिए, लोगों को पहले भारत को गहराई से समझना होगा और फिर उसे अपने जीवन में उतारना शुरू करना होगा।

मुख्यमंत्री ने सुशासन भवन में बैठक की किसान कल्याण वर्ष के तहत किसानों को दी जाने वाली सौगातों, योजनाओं पर हुई चर्चा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को राजधानी स्थित अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन और नीति विश्लेषण स्कूल में सीनियर अफसरों की अहम बैठक बुलाई थी। बैठक में किसान कल्याण वर्ष के तहत किसानों को दी जाने वाली सौगातों और योजनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई। बताया जा रहा है कि मुख्यमंत्री इस बैठक के बाद सभी कलेक्टरों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए समीक्षा बैठक की इसमें अधिकारियों को आज हुई बैठक में लिए गए निर्णयों को जमीन पर उतारने के निर्देश दिए जाएंगे।



आगामी योजनाओं पर किया जा रहा था मंथन

मुख्यमंत्री ने किसान कल्याण वर्ष को लेकर सुशासन भवन में नीतिगत फैसलों के लिए आरंभित रखा था। बैठक में सहकारिता, कृषि, पशुपालन, राजस्व, वित्त, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, जल संसाधन, ऊर्जा, कुटीर एवं प्रामोद्योग समेत सभी संबंधित विभागों के अपर मुख्य सचिव और प्रमुख सचिव स्तर के अधिकारी शामिल हैं। अलग-अलग सेक्टर में किसानों के हित में किए जा सकने वाले कार्यों और आगामी योजनाओं पर मंथन जारी है।

गेहूं खरीदी लक्ष्य में बढ़ोतरी का ऐलान

इससे पहले मुख्यमंत्री ने शुक्रवार रात सोशल मीडिया के माध्यम से प्रदेशवासियों को संबोधित करते हुए कहा था कि सरकार किसानों से किए गए वादों को पूरा कर रही है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में रिकॉर्ड गेहूं उत्पादन को देखते हुए केंद्र सरकार से खरीदी सीमा बढ़ाने का अनुरोध किया गया था, जिसे मंजूर मिल गई है। मुख्यमंत्री के अनुसार गेहूं खरीदी का लक्ष्य 78 लाख मीट्रिक टन से बढ़ाकर 100 लाख मीट्रिक टन कर दिया गया है। 22 लाख मीट्रिक टन की यह बढ़ोतरी किसानों की मेहनत का सम्मान है और उनकी आय बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

संदेश में कहा, अब गेहूं खरीदी सप्ताह में 6 दिन, स्लॉट बुकिंग 9 मई तक

- गेहूं खरीदी के लिए स्लॉट बुकिंग पूरी तरह से खोली जा चुकी है।
- गेहूं खरीदी अब सप्ताह में 6 दिन होगी। शनिवार को अवकाश नहीं रहेगा।
- खरीदी केंद्रों में समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी लगातार जारी रहेगी। 30 अप्रैल तक होने वाली स्लॉट बुकिंग को अब 9 मई तक बढ़ा दिया गया है।
- अब किसानों को उनकी भूमि के बदले 4 गुना तक मुआवजा दिया जाएगा।
- उड़द को तय समर्थन मूल्य पर खरीदा जाएगा और किसानों को तय समर्थन मूल्य के अतिरिक्त खरीदी गई उड़द पर 600 रुपए प्रति क्विंटल बोनास राशि भी दी जाएगी।
- किसानों को मात्र पांच रुपए में कृषि पंप का कनेक्शन दिया जा रहा है।
- हमारी योजना है कि अब हमारे किसानों को रात के बदले दिन में ही सिंचाई के लिए पर्याप्त बिजली मिले।
- प्रदेश को मिल्क कैपिटल बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। नई 1752 दुग्ध प्रतिदिन का दूध संकलन 10 लाख किलोग्राम से अधिक पहुंच गया है और दुग्ध उत्पादक किसानों को 1600 करोड़ रुपए से अधिक की राशि का भुगतान किया गया है।
- किसानों को अब दूध का दाम प्रति किलो 8 से 10 रुपए बढ़कर मिल रहा है।
- इस साल युद्ध की स्थिति के बावजूद प्रदेश में यूरिया की उपलब्धता 5.90 लाख मीट्रिक टन है, जो पिछले साल से भी अधिक है।

भारतीय परिधान में राम मंदिर में प्रवेश करें श्रद्धालु

- अयोध्या में मंदिर ट्रस्ट ने आम जनता व श्रद्धालुओं से की अपील
- पुरुषों को धोती-कुर्ता तो महिलाओं को साड़ी पहनने की दी सलाह

अयोध्या (एजेंसी)। भीषण गर्मी और बढ़ती श्रद्धालु संख्या के बीच श्री राम मंदिर अयोध्या में दर्शन व्यवस्था को अधिक सुगम बनाने के लिए ट्रस्ट ने नई एडवाइजरी जारी की है। ऑनलाइन दर्शन पास बुकिंग के फॉर्मेट में बदलाव किया गया है, जबकि समग्र व्यवस्था पहले की तरह जारी रहेगी। इसके साथ ही श्रद्धालुओं से भारतीय परिधान में दर्शन करने की अपील भी की गई है। गर्मी के कारण दर्शन के समय और भीड़ के पैटर्न में भी बदलाव देखने को मिल रहा है, जिसे ध्यान में रखते हुए प्रशासन व्यवस्थाएं अपडेट कर रहा।



भारतीय परिधान में दर्शन की अपील- मंदिर ट्रस्ट ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे भारतीय परिधान में मंदिर में प्रवेश करें। पुरुषों के लिए धोती-कुर्ता या धोती-पजामा और महिलाओं के लिए साड़ी, पंजाबी ड्रेस या चूड़ीदार-दुपट्टा पहनने की सलाह दी गई है। हालांकि, इसे अनिवार्य नहीं किया गया है, लेकिन ट्रस्ट ने इसे धार्मिक और सांस्कृतिक मर्यादा के अनुरूप बताया है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की वेबसाइट पर दर्शन पास बुकिंग के फॉर्मेट में बदलाव किया गया है। अब सामान्य दर्शन पास के साथ अन्य श्रेणियों के विकल्प भी दिए गए हैं, जिससे श्रद्धालुओं को अपनी सुविधा के अनुसार पास चुनने में आसानी होगी।

भीषण गर्मी का असर दोपहर में घटी भीड़

चिलचिलाती धूप का असर अब मंदिर में दर्शन के समय पर भी साफ दिख रहा है। दोपहर के समय श्रद्धालुओं की संख्या में कमी आई है, जबकि सुबह और शाम के समय भारी भीड़ उमड़ रही है। बाहर से आए श्रद्धालुओं का कहना है कि पहले टेढ़ी बाजार से वाहनों को रोक दिया जाता था, जिससे कुरीब तीन किलोमीटर पैदल चलकर मंदिर तक पहुंचना पड़ता था। अब येलो जोन पास मिलने से वाहन मंदिर के पास तक छोड़ सकते हैं, जिससे गर्मी में काफी राहत मिली है। पुलिस की नाकेबंदी हटने और येलो जोन पास की सुविधा मिलने से श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों को बड़ी राहत मिली है। अब दर्शन के लिए आने वाले लोग कम समय और कम परेशानी में मंदिर तक पहुंच पा रहे हैं। सामान्य दर्शन पास पर एक साथ पांच लोग दर्शन कर सकते हैं, जिससे परिवार के साथ आने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा मिल रही है। ट्रस्ट के अनुसार, सुगम दर्शन पास के सभी स्लॉट 8 मई तक पहले ही बुक हो चुके हैं। हालांकि, अधिक से अधिक लोगों को सुविधा देने के लिए दर्शन पास की संख्या बढ़ाने पर विचार किया जा रहा है, ताकि आमजन को भी अधिक अवसर मिल सके।



संक्षिप्त समाचार

केसीआर की बेटी के कविता ने बना ली अपनी नई पार्टी

माई से विवाह के बाद बनाई

टीआरएस, लड़ेगी चुनाव

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना जागृति संगठन की अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की बेटी के. कविता ने शनिवार को तेलंगाना राष्ट्र सेना (टीआरएस) नामक नए राजनीतिक दल की शुरुआत की। बता दें कि केसीआर की पार्टी के नाम का शॉर्ट फॉर्म भी टीआरएस यानी तेलंगाना राष्ट्र समिति था।



कुछ साल पहले इसे भारत राष्ट्र समिति कर दिया गया। कविता ने हैदराबाद के बाहरी इलाके में आयोजित एक कार्यक्रम में अपनी पार्टी के नाम की घोषणा की। सितंबर 2025 में कविता को बीआरएस से तब निलंबित कर दिया गया था जब उन्होंने अपने चचेरे भाई एवं पार्टी नेता टी. हरीश राव तथा रिश्तेदार जे. संतोष कुमार पर बीआरएस के शासन के दौरान निर्मित कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना को लेकर अपने पिता और बीआरएस अध्यक्ष के. चंद्रशेखर राव की छवि को खराब करने का आरोप लगाया था। निलंबन के बाद से वह तेलंगाना जागृति नामक अपने नेतृत्व वाले सांस्कृतिक संगठन के बैनर तले सार्वजनिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं। उनके पिता के नेतृत्व वाली भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) का मूल नाम तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) था।

मणिपुर में नागा-कुकी

झड़पों में 3 लोगों की मौत

- दोनों पक्ष एक-दूसरे पर लगा रहे हमले के आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। मणिपुर के उखरुल जिले में शुक्रवार तड़के नागा और कुकी-जो समुदायों के सशस्त्र समूहों के बीच दो अलग-अलग गोलीबारी की घटनाओं में तीन लोगों की मौत हो गई और कम से कम पांच लोग घायल हुए। मरने वालों में एक तांगखुल नागा और दो कुकी-जो समुदाय के व्यक्ति शामिल हैं। दोनों समुदाय एक-दूसरे पर हमला शुरू करने का आरोप लगा रहे हैं। तांगखुल नागा लॉन (टीएनएल) के अनुसार, 29 वर्षीय होशोकमी जमंग नामक नागा ग्राम रक्षक को सशस्त्र कुकी उग्रवादियों ने घात लगाकर मार डाला। जमंग सिनाकेइथेई गांव के पास गश्त



पर थे। इस घटना में चार अन्य नागा स्वयंसेवक भी गंभीर रूप से घायल हुए। सुरक्षा बलों ने दो कुकी-जो युवकों के शव बरामद किए। मृतकों की पहचान पाओमिनलुन हाओलाई (19 वर्ष) और लेटलाल सिटलाहो (43 वर्ष) के रूप में हुई। कुकी संगठनों ने दावा किया कि तांगखुल नागा उग्रवादियों ने मुल्लम और शोमफाल गांवों पर तड़के करीब 5.30 बजे हमला किया, जिसमें दो स्वयंसेवक मारे गए। कांगपोकपी जिले की बुंगी-इहान रक्षा समिति ने इसे कुकी गांवों पर हमला बताया। कुकी इन्फैंट्री मणिपुर ने आरोप लगाया कि हमले में कई घर जलाए गए, महिलाएं और बच्चे समेत कई लोग घायल हुए तथा कई परिवार विस्थापित हो गए।

रिफाइनरी में आग, 'साइबर अटैक' की है प्रबल आशंका

- ऑटोमेटिक कंट्रोल यूनिट्स हाईजैक तो नहीं हुए होगी जांच
- आसपास रहने वालों का पुलिस ने शुरू किया वरिफिकेशन

बाइपेर (एजेंसी)। देश की सबसे आधुनिक और हाईटेक बालोतरा की पंचपदरा रिफाइनरी में 20 अप्रैल को लगी आग के बाद



सुरक्षा एजेंसियां ऐक्टिव हैं। इस हादसे को साइबर अटैक से भी जोड़कर देखा जा रहा है। जांच एजेंसियां इस

एंगल पर भी जांच को आगे बढ़ा रही हैं। आशंका जताई जा रही है कि हादसे के वक्त रिफाइनरी के ऑटोमेटिक कंट्रोल यूनिट्स को बाहर से हाईजैक कर लिया गया होगा। सुरक्षा एजेंसियां अब रिफाइनरी के डिजिटल लॉस और डेटा को खंगाल रही हैं। एक्सपर्ट्स यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या किसी बाहरी आईपी एड्रेस ने सिस्टम में संध लाने की कोशिश तो नहीं की थी। उधर, आसपास के इलाके में रहने वाले लोगों का पुलिस वरिफिकेशन भी किया जा रहा है। रिफाइनरी में आग पीएम के दौरे से पहले लगी।

मुंबई-अहमदाबाद की तर्ज पर सूरत में चलेगी डबल डेकर

- वडोदरा में 100 फीसदी इलेक्ट्रिक बसों की डिलीवरी शुरू

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात की डायमंड सिटी सूरत में मुंबई और अहमदाबाद की तर्ज पर डबल डेकर बस चलेगी। शहर में ट्रायल रन डबल डेकर पहुंच भी गई है, लेकिन राज्य में स्थानीय निकाय चुनावों की आचार संहिता के चलते लोगों को इस बस के सफर के लिए इंतजार करना पड़ेगा। कुछ ऐसी ही स्थिति वडोदरा की है। वडोदरा में नगर निगम ने पीएम ई-बस सेवा के तहत 250 बसें चलाने का लक्ष्य रखा है।

पहले फेज की 40 बसों की बसें की डिलीवरी शुरू हो गई है, पहली सात शहर पहुंच गई हैं, लेकिन ये बसें अभी पूजा

करने के बाद डिपो में खड़ी कर दी गई हैं। 100 फीसदी इलेक्ट्रिक बसों का संचालन स्थानीय निकाय चुनावों की प्रक्रिया पूरी होने और शहर में मेयर की नियुक्ति होने के बाद होने की उम्मीद की जा रही है। वडोदरा नगर निगम के कमिश्नर अरुण महेसा बाबू के अनुसार बताया कि आदर्श आचार संहिता लागू है, लेकिन इन बसों के रूट और टिकटिंग को लेकर निगम का कर रहा है। उन्होंने कहा कि चुनाव खत्म होने और पीएमओ से समय मिलते ही इन बसों का शुभारंभ हो जाएगा। गौरवलेख हो कि 2030 कॉमनवेल्थ गेम्स को देखते हुए जहां

अहमदाबाद में नई सुविधाएं जोड़ी जा रही हैं तो वहीं दूसरी बुलेट ट्रेन के मैप पर आने वाले शहरों में सरकार की तरफ इन्फ्रास्ट्रक्चर को पुश किया जा रहा है। अहमदाबाद, सूरत और वडोदरा तीनों शहरों में बुलेट ट्रेन के स्टेशन भी बन रहे हैं। इन्हें जोड़ने वाली सड़कों को वर्ल्ड क्लास बनाने की तैयारी है।

अभी दो शहरों में दौड़ती है डबल डेकर

डबल डेकर बस का नाम आते ही मन में मुंबई की छवि उभरती है, लेकिन अगर सूरत में डबल डेकर बस का संचालन होता है तो यह गुजरात का तीसरा शहर होगा। सूरत में पुराने वक्त पर डबल डेकर चलती थी। ऐसे में यह शहर के लिए डबल डेकर की घर वापसी जैसा है। अहमदाबाद में पहले से डबल डेकर बस चल रही है। इसके बाद पीएम मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट गांधीनगर के पास भी डबल डेकर बस की कनेक्टिविटी है। सूरत गुजरात का तीसरा शहर बनेगा। सूरत में डबल डेकर बस को लेकर काफी रोमांच है। सूरत में अहमदाबाद की तर्ज पर बीआरटीएस भी है।

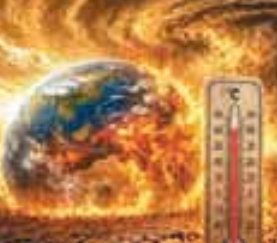


भीषण गर्मी का कहर लेकर आ रहा अल-नीनो

- मई से दिखने लगेगा असर, डब्ल्यूएमओ का अलर्ट जारी
- हिंदू कुश हिमालय में बर्फ की कमी, जल सुरक्षा खतरे में



नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने चेतावनी दी है कि एल नीनो की स्थिति मई से जुलाई के बीच विकसित हो सकती है, जिससे भारत समेत दक्षिण एशिया में मौसम पर बड़ा असर पड़ेगा। पहले अनुमान था कि यह स्थिति मानसून के दूसरे हिस्से (अगस्त-सितंबर) में बनेगी, लेकिन अब इसके जल्दी आने की संभावना जताई गई है। अल नीनो एक ऐसी जलवायु स्थिति है,



जो हर 2 से 7 साल में आती है और करीब 9 से 12 महीने तक रहती है। इसके कारण दुनिया के अलग-अलग

हिस्सों में तापमान और बारिश के पैटर्न बदल जाते हैं और आमतौर पर वैश्विक तापमान बढ़ता है। भारत मौसम विज्ञान विभाग पहले ही इस साल सामान्य से कम बारिश का अनुमान दे चुका है। डब्ल्यूएमओ के अनुसार, भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह का तापमान तेजी से बढ़ रहा है, जिससे अगले महीने एल नीनो की स्थिति बनने के संकेत मिल रहे हैं।

हिमालय में बर्फ कम, बढ़ी चिंता

रिपोर्ट के अनुसार, हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र में इस साल बर्फ की मात्रा सामान्य से 27.8 फीसदी कम रही है, जो पिछले 20 सालों में सबसे कम है। इससे नदियों के पानी पर असर पड़ सकता है और करीब 2 अरब लोगों की जल सुरक्षा को खतरा हो सकता है। आमतौर पर एल नीनो के दौरान ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और भारत के कुछ हिस्सों में कम बारिश या सूखे की स्थिति बनती है। वहीं दक्षिण अमेरिका, अमेरिका के दक्षिणी हिस्सों, अफ्रीका के कुछ क्षेत्रों और मध्य एशिया में ज्यादा बारिश देखने को मिलती है।

टीएमसी सरकार से मुक्ति का समय आ गया है

- योगी बोले-4 मई के बाद बंगाल में टीएमसी के गुंडों को कहीं छुपने की जगह नहीं मिलने वाली है

लखनऊ / कोलकाता (एजेंसी)। टीएमसी ने नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) का विरोध किया। इस अधिनियम से पाकिस्तान और बांग्लादेश से परेशान होकर आए हिंदू, बौद्ध और जैनों को भारत की नागरिकता मिलेगी, लेकिन ममता दीदी को बुरा लगता है कि अगर हिंदू ज्यादा होंगे तो सड़क पर इफ्तारी कैसे होगी। यूपी में कोई सड़क पर इफ्तार पार्टी नहीं कर सकता, नमाज भी नहीं पढ़ सकता। मस्जिद से कोई आवाज भी नहीं आती। टीएमसी सरकार



से मुक्ति का समय आ गया है। 4 मई को जब रिजल्ट आएगा तो टीएमसी के गुंडों को कहीं छुपने की जगह नहीं मिलने वाली है। सीएम योगी ने शनिवार को पश्चिम बंगाल में चुनावी रैली में

‘ममता को बंगाल में जय श्रीराम बोलने से परेशानी’- सीएम योगी ने कहा- बंगाल विभाजन के समय वंदे मातरम् हर बंगाली का हथियार बना था, लेकिन ममता दीदी को इन सबसे चिढ़ है। बंगाल में जय श्रीराम बोलने से उन्हें परेशानी होती है। कोलकाता हाईकोर्ट को आदेश देना पड़ा था कि जो लोग दुर्गा पूजा में अव्यवस्था फैला रहे हैं, उन्हें रोका जाए। उन्होंने कहा- बंगाल में माफिया राज की प्रतीक बनी यह सरकार कुछ सुनने को तैयार नहीं है।

‘यूपी में नकपूर्य है, नदंगा है, यूपी में सब चंगा है’

सीएम ने कहा- कभी भारत की अर्थव्यवस्था में बंगाल का सबसे ज्यादा योगदान था। बेटियां और बहनें सुरक्षित हुआ करती थीं, लेकिन अब गुंडा टैक्स वसूला जा रहा है। कैटल माफिया, सैंड माफिया और लैंड माफिया बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा- 2017 तक यूपी में भी यही स्थिति थी। व्यापारी पलायन कर रहे थे, लाल जिहाद और लैंड जिहाद की घटनाएं बढ़ती जा रही थीं। जय श्रीराम बोलने पर लाठी और गोली चलती थी। आज यूपी में डबल इंजन सरकार है। आज यूपी में नकपूर्य है, नदंगा है, यूपी में सब चंगा है।

बंगाल के सामने पहचान का संकट

योगी ने कहा- जिस बंगाल ने भारत को पहचान दी, आज उसी के सामने पहचान का संकट है। टीएमसी की सरकार 15 सालों में माफिया राज, आतंक और भ्रष्टाचार का प्रतीक बन चुकी है। उसके गुंडे सरेंआम घूम रहे हैं। सीएम ने कहा कि दो दिन पहले पहले चरण की वोटिंग में लोगों ने रिफॉर्ड मतदान किया। अभी से जो बातें सुनाई दे रही हैं, जो नजारे दिखाई दे रहे हैं। 4 मई को जब नतीजे आएंगे, तब चारों ओर भगवा झंडा लहराता दिखेगा। ‘यूपी का बुलडोजर माफिया को मिट्टी में मिला देता है’- योगी ने कहा- अंधेरा में भगवान राम की जन्मस्थली पर भव्य मंदिर बन चुका है। कांग्रेस, कम्युनिस्ट और टीएमसी रोक नहीं पाए। यूपी में अब रोपते बन रहे हैं।

रिफाइनरी में आग, 'साइबर अटैक' की है प्रबल आशंका

- ऑटोमेटिक कंट्रोल यूनिट्स हाईजैक तो नहीं हुए होगी जांच
- आसपास रहने वालों का पुलिस ने शुरू किया वरिफिकेशन

बाइपेर (एजेंसी)। देश की सबसे आधुनिक और हाईटेक बालोतरा की पंचपदरा रिफाइनरी में 20 अप्रैल को लगी आग के बाद



सुरक्षा एजेंसियां ऐक्टिव हैं। इस हादसे को साइबर अटैक से भी जोड़कर देखा जा रहा है। जांच एजेंसियां इस

एंगल पर भी जांच को आगे बढ़ा रही हैं। आशंका जताई जा रही है कि हादसे के वक्त रिफाइनरी के ऑटोमेटिक कंट्रोल यूनिट्स को बाहर से हाईजैक कर लिया गया होगा। सुरक्षा एजेंसियां अब रिफाइनरी के डिजिटल लॉस और डेटा को खंगाल रही हैं। एक्सपर्ट्स यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या किसी बाहरी आईपी एड्रेस ने सिस्टम में संध लाने की कोशिश तो नहीं की थी। उधर, आसपास के इलाके में रहने वाले लोगों का पुलिस वरिफिकेशन भी किया जा रहा है। रिफाइनरी में आग पीएम के दौरे से पहले लगी।

तस्करों की 3.5 करोड़ रुपए की संपत्ति जब्त, आतंकवाद की टूट रही कमर

- नशे के खिलाफ श्रीनगर पुलिस का महा अभियान

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर की श्रीनगर पुलिस ने शनिवार को बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस ने नशीली दवाओं के खिलाफ तेज कार्रवाई में एक ड्रग तस्कर से संबंधित 3.5 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त कर ली। पुलिस के एक बयान में कहा गया है कि मादक पदार्थों की तस्करों के खिलाफ श्रीनगर पुलिस अपनी कार्रवाई को जारी रखे हुए है। राज्य में चल रहे नशा मुक्त अभियान के तहत श्रीनगर पुलिस ने मादक पदार्थों के तस्करों से संबंधित 3.5 करोड़ रुपये की अचल संपत्तियों को जब्त कर लिया है। एनडीपीएस अधिनियम की धारा 68-एफ के प्रावधानों के तहत कार्रवाई करते हुए संगम पुलिस स्टेशन ने एनडीपीएस अधिनियम की धारा 8/20 और 29 के तहत एफआईआर संख्या 56/2025 में शामिल आरोपियों से जुड़ी दो अचल संपत्तियों को जब्त कर लिया। जब्त की गई संपत्तियों के विवरण में आरोपी शकील अहमद गानी की कनाल की जमीन शामिल है।



आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा यह आंदोलन- जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शनिवार को सांबा में आयोजित नशा-विरोधी अभियान में भाग लिया। उन्होंने एक पोस्ट में कहा कि आज सांबा में भारी जनसमूह ने नशामुक्त जम्मू-कश्मीर अभियान में भाग लिया और समाज से नशा मिटाने का संकल्प लिया। सभा को संबोधित करते हुए मैंने दोहराया कि यह 100 दिवसीय आंदोलन आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा और इस बात का प्रमाण होगा कि जब लोग एकजुट होते हैं, तो वे इतिहास बदल सकते हैं।

कार्यालय तहसीलदार प्रभातपट्टन, जिला बेतूल

क्र.सं.	नाम	विवरण
1.	सत्यदेव पुत्र जन्मती पंवार	
2.	रामकृष्ण पुत्र जन्मती	
3.	फागु पुत्र द्यारवा	
4.	कारु पुत्र कुस्था	
5.	मुन्ना पुत्र कुस्था	
6.	कुमुद पुत्री कुस्था	
7.	ललिता पुत्री कुस्था	
8.	बेला पुत्री कुस्था	
9.	फुलवती बेवा शेरवार	
10.	मनोज पुत्र शेरवार	
11.	रंजीत पुत्र शेरवार	
12.	राधा पुत्री शेरवार	
13.	शीतल पुत्री शेरवार	
14.	दुर्गा पुत्री जन्मती	
15.	रामवारी पुत्री जन्मती	
16.	शिवर पुत्र द्यारवा	
17.	निरा बेवा द्यारवा	
18.	मध्यमलाल पुत्र द्यारवा	
19.	मनोहर उदर	
20.	मनीराम उदर	

करोड़ों के टावर उपकरण चोरी का खुलासा, सरगना दिल्ली से पकड़ाया कबाड़ के कारोबार की आड़ में उपकरण बेचने का अवैध धंधा

इंदौर। मोबाइल टावरों से करोड़ों रुपये के उपकरण चोरी करने वाले अंतरराज्यीय गिरोह के मुख्य आरोपी को पुलिस ने पकड़ लिया है। अपराध शाखा ने लंबे समय से फरार चल रहे इंतजार मलिक को दिल्ली से गिरफ्तार किया है। वह उत्तर प्रदेश और दिल्ली में ठिकाना बदलकर रह रहा था। पुलिस उपायुक्त (अपराध) राजेश त्रिपाठी के अनुसार, वोडाफोन आइडिया लिमिटेड के महाप्रबंधक अंबरीष तिवारी की शिकायत पर इस मामले में प्रकरण दर्ज किया गया था। जांच में सामने आया कि आरोपियों ने ठेके का झांसा देकर मध्य प्रदेश के कई शहरों में लगे मोबाइल टावरों से लगभग आठ करोड़ रुपये के 3जी उपकरण निकाल लिए। इन्हें गोदाम में जमा करने के बजाय चोरी कर लिया गया। इस मामले में अपराध शाखा ने पहले ही गिरोह के पांच सदस्यों इमरान मलिक, उस्मान मलिक, आबिद मलिक, राकेश उर्फ सचिन कुमार सिंह और संजीव कुमार को गिरफ्तार कर लिया था। पूछताछ में पता चला कि चोरी किए गए उपकरण दिल्ली के सीलमपुर स्थित कबाड़ बाजार में बेचे जाते थे। इस जानकारी के आधार पर पुलिस ने दिल्ली के कदमपुरी इलाके में दबिश देकर इंतजार मलिक को पकड़ लिया। आरोपी पिछले करीब दस वर्षों से सीलमपुर में कबाड़ का काम कर रहा था और इसी के सहारे चोरी का माल खरीदकर बेचता था। बताया गया है कि वह केवल छठी कक्षा तक पढ़ा है। पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। आशंका जताई जा रही है कि यह गिरोह चोरी किए गए उपकरणों को विदेश तक पहुंचाता था। मामले में आगे की जांच जारी है और अन्य लोगों की तलाश की जा रही है।

महिला कांग्रेस का पोस्टकार्ड अभियान



इंदौर। महिला आरक्षण को लेकर देशभर में राजनीतिक चमत्सायन तेज हो गया है। लोकसभा में महिला आरक्षण संशोधन विधेयक पारित नहीं होने के बाद कांग्रेस और भाजपा के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है। इसी कड़ी में मध्य प्रदेश महिला कांग्रेस ने पोस्टकार्ड अभियान शुरू कर नया सियासी मोर्चा खोल दिया है। शुक्रवार को प्रदेश अध्यक्ष रीना बोरासी के नेतृत्व में इंदौर स्थित जीपीओ से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम बड़ी संख्या में पोस्टकार्ड भेजे गए। इन पोस्टकार्ड के माध्यम से वर्ष 2023 में पारित महिला आरक्षण विधेयक को तत्काल लागू करने की मांग उठाई गई। रीना बोरासी ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि महिला मुद्दों पर राजनीति की जा रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि जनगणना और परिसीमन जैसी शर्तें जोड़कर कानून को लागू करने में देरी की जा रही है। महिला कांग्रेस ने प्रदेशभर से 15 दिनों में 1 लाख पोस्टकार्ड भेजने का लक्ष्य तय किया है। अभियान के दौरान महिलाओं ने नारेबाजी कर सरकार से जल्द निर्णय लेने की मांग भी उठाई।

झोन-7 में निगम आयुक्त का निरीक्षण



इंदौर। स्वच्छ सर्वेक्षण की तैयारियों को लेकर नगर निगम ने सख्ती तेज कर दी है। शुक्रवार सुबह आयुक्त क्षितिज सिंघल ने झोन क्रमांक-7 के विभिन्न क्षेत्रों का औचक निरीक्षण कर अधिकारियों को व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त रखने के निर्देश दिए। इस दौरान अपर आयुक्त अर्थ जैन सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे। आयुक्त ने वार्ड 29, 32 और 34 में स्वच्छता व्यवस्था का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान वाटर बॉडी, बस स्टॉप, सार्वजनिक शौचालय, उद्यान और बाजार क्षेत्रों की स्थिति पर विशेष ध्यान दिया गया। निरीक्षण के दौरान उद्यानों में ट्रेटेड पानी के उपयोग के निर्देश दिए गए। साथ ही क्यूरे-बावड़ी जैसे जल स्रोतों की नियमित सफाई और संरक्षण सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। आयुक्त ने कहा कि स्वच्छ सर्वेक्षण की गाइडलाइन के अनुरूप सभी व्यवस्थाएं मजबूत रहें। कचरा प्रबंधन के साथ जन जागरूकता बढ़ाने पर भी विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए गए। निरीक्षण में अधिकांश स्थानों की सफाई व्यवस्था संतोषजनक पाई गई।

घर में आग लगी, रहवासियों ने बुझाई

इंदौर। बाणगंगा क्षेत्र में एक घर की छत पर भीषण आग लग गई। आग इतनी जल्दी फैली कि छत पर खड़े लोगों को बाहर निकलने का समय ही नहीं मिला। कुछ ही देर में आग ने भीषण रूप ले लिया। आस पास के रहवासियों ने तत्परता दिखाते हुए आग पर काबू करने की कोशिश की और फायर ब्रिगेड को सूचना दी। पुलिस के मुताबिक घटना शुक्रवार दोपहर 12 बजे के करीब कुशवाहा नगर स्थित एक घर में हुई। छत पर मौजूद लोगों को निकलने का रास्ता नहीं मिल रहा था। ऐसे में आसपास के रहवासियों ने अपनी छतों से पानी डालकर आग बुझाई। लोगों को निकलने के लिए लोग नीचे तिरपाल लेकर खड़े हो गए। फिर आग में फंसे लोगों से तिरपाल पर कूदने का बोलने लगे। समय रहते टैंकियों से पानी डालकर आग पर काबू पा लिया गया। फिलहाल आग लगने का कारण स्पष्ट नहीं है।

तस्कर पर पिट एनडीपीएस में कार्रवाई

इंदौर। खजुराना पुलिस ने तस्कर सैयद रेहान उर्फ मांडा पिता सैयद लुकमान निवासी ममता कॉलोनी पर पिट एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई की है। आरोपी के विरुद्ध प्रकरण तैयार कर डीसीपी एवं अतिरिक्त पुलिस आयुक्त के प्रतिवेदन पर संभागायुक्त डॉक्टर सुदाम खाड़े को छह माह के लिए भोपाल जेल भेज दिया है।

दो बच्चों के अपहरण का कारण मिलने वाली फिरौती से पैसे की तंगी दूर करना

भाई के कहने पर बहन ने अपहरण किया, दोस्त और उसकी पत्नी जुड़े



30 जवानों ने की तलाशी

घटना को गंभीरता से लेते हुए एसीपी तुषार सिंह, टीआई सुरेंद्र सिंह रघुवंशी सहित 30 जवानों ने होटल, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, बगीचे, मंदिर एवं संभावित ठिकानों पर तलाशी ली। सभी दूर के फुटेज लिए। मशकत के बाद घटनास्थल से 15 किमी दूर राजेन्द्र नगर थाना क्षेत्र के दत्त नगर स्थित शिवांग अपार्टमेंट तक पहुंची। यहां तीसरी मंजिल स्थित फ्लैट में कुछ असामान्य गतिविधि नजर आने पर टीम ने कार्रवाई कर बच्चों को सकुशल बरामद कर आरोपियों राधिका पिता राजेश प्रजापति, तिलक नगर एक्सप्रेसवे, उसका भाई विनित, शिवांग अपार्टमेंट में रहने वाला विनित का दोस्त ललित सेन और उसकी पत्नी तनिशा सेन को पकड़ा।

दूल्हा अधेड़, 13 साल की मासूम को बनाया बालिग, पूरी साजिश बेनकाब

इंदौर। गांव रंगवासा में एक ऐसी साजिश रची गई, जिसने कानून और इंसानियत दोनों को कटघरे में खड़ा कर दिया। 13 साल की मासूम बच्ची को कागजों में बालिग दिखाकर उसका विवाह 42 साल के अधेड़ से तय कर दिया गया। सब कुछ तय योजना के तहत हो रहा था। मंडप सज चुका था, बैंड-बाजे की तैयारी थी, लेकिन ऐन वक्त पर प्रशासन की सतर्कता ने इस काले खेल का पर्दाफाश कर दिया। दरअसल, परिवार ने चालाकी दिखाते हुए फर्जी अंकसूचीयों के जरिए दोनों बच्चों की उम्र ज्यादा बताई। पहली नजर में सब कुछ सामान्य लग रहा था, लेकिन शिकायत मिलने पर महिला एवं बाल विकास विभाग हस्तगत में आया। उड़नदस्ता प्रभारी महेंद्र पाठक और दल प्रभारी आशीष गोस्वामी की जांच के दौरान जब दस्तावेजों की सच्चाई खंगाली गई, तो पता चला कि इंदौर की बताई गई मार्कशीट पूरी तरह फर्जी है। संबंधित स्कूल ने साफ इनकार कर दिया कि ऐसा कोई छात्र उनके यहां पढ़ा ही नहीं।

इंजीनियर को लूटने की कोशिश हुई

इंदौर। हीरानगर थाना क्षेत्र में दवा कंपनी में कार्यरत इंजीनियर से लूटने की कोशिश की गई। बाइक सवार बदमाशों ने उसे रोका और चाकू दिखाया। इंजीनियर ने जैसे-तैसे एक्टिवा छोड़ भागकर अपनी जान बचाई। कारस देव नगर के शिवम चतुर्वेदी ने बताया कि वह गुरुवार सुबह 6 बजे एक्टिवा से पोलेग्राउंड की ओर जा रहे थे। तभी आईटीआई रोड पर कुछ बदमाशों ने उन्हें आवाज देकर रोका। जैसे ही शिवम रुके, बाइक पर बैठे बदमाश ने चाकू निकाल लिया। खतरे को भांपते ही शिवम तुरंत एक्टिवा छोड़कर भाग निकला। बदमाश उनकी एक्टिवा ले गए। कुछ देर बाद बदमाश फिर बाइक से उसी जगह लौटे, लेकिन तब तक शिवम माली के रास्ते अपने घर पहुंच चुके थे। घर पहुंचकर उन्होंने परिजनों को पूरी घटना बताई। परिजनों के अनुसार, शिवम की किसी से कोई दुश्मनी नहीं है। घटना के समय उनके पास मोबाइल और सोने की चेन भी थी, जिसे बदमाश लूटने की फिराक में थे। पुलिस आरोपियों की तलाश में जुट गई है।

कृष्णपुरा में महिला की मौत, गांधीनगर में प्रताड़ना से तंग आकर जहर पिया

इंदौर। शहर में महिलाओं से जुड़े दो अलग-अलग मामले सामने आए हैं, जिनमें एक महिला की संदिग्ध हलात में मौत हो गई, जबकि दूसरी ने घरेलू प्रताड़ना से परेशान होकर जहर खा लिया। पहली घटना एमजी रोड क्षेत्र की है। यहां कृष्णपुरा छत्री के पास एक महिला बेसुध हालत में मिली। उसकी पहचान पलासिया निवासी सीमा उर्फ नीता प्रजापति के रूप में हुई। बताया गया कि वह गुरुवार को अपने घर से अचानक लापता हो गई थी और उसी दिन कृष्णपुरा इलाके में पड़ी मिली। परिवार को जानकारी मिलने पर उसके भाई अमन उसे अस्पताल लेकर पहुंचे। पहले एक निजी अस्पताल और फिर

13 साल की नाबालिग का रिश्ता 42 साल के अधेड़ से तय हुआ



फर्जी अंकसूची से फर्जीवाड़ा

जब दूसरी अंकसूची की पुष्टि की गई, तो हकीकत सामने आ गई। बालिका की उम्र महज 13 साल और बालक की 19 साल निकली। इसके बाद प्रशासन की टीम तुरंत मौके पर पहुंची। दल में उड़नदस्ता सदस्य संगीता सिंह, सुपरवाइजर सुविधा कटार और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ने परिवार से असली दस्तावेज मांगे, लेकिन उनके पास सिर्फ मोबाइल में फोटो ही थी, असली कागज कहीं नहीं मिले। पाठक ने बताया कि कानूनी कार्रवाई का डर दिखाया गया तो परिवज बेकफुट पर आ गए और आखिरकार विवाह निरस्त करने पर राजी हो गए।

42 साल के चाचा से पोती का रिश्ता

चौकाने वाली बात यह भी सामने आई कि 'बेटी दो-बेटी लो' की परंपरा निभाने के नाम पर दादा ने अपनी पोती का रिश्ता बहू के 42 वर्षीय चाचा से तय कर दिया था, ताकि बदले में पोते की शादी हो सके। इस अमानवीय सौदेबाजी पर टीम ने बुजुर्ग को कड़ी फटकार लगाई और बालिका के भविष्य के साथ खिलवाड़ न करने की समझाइश दी। विवाह की तैयारियां पूरी हो चुकी थीं। टेंट लग चुका था, साउंड सिस्टम पर गाने बज रहे थे, लेकिन जैसे ही टीम ने हस्तक्षेप किया, तुरंत सब हटाया गया। टेंट और साउंड संचालकों को भी कानून की जानकारी देकर मौके से हटाया गया। यहां तक कि विवाह पत्रिका छापने वाले को भी चेतावनी दी गई, जिसके बाद उसने लिखित में माफी मांगी। जानकारी के मुताबिक, यह विवाह उज्जैन में होना था, जिसके लिए वहां के प्रशासन को भी सतर्क कर दिया गया था। इंदौर से लेकर उज्जैन तक प्रशासन की नजर बनी रही और एक बड़ी घटना टल गई।

सख्त सुरक्षा के बीच 26 अप्रैल को राज्य वन सेवा की प्रारंभिक परीक्षा

इंदौर। मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा

'राज्य सेवा एवं राज्य वन सेवा प्रारंभिक परीक्षा-2026' का आयोजन 26 अप्रैल को किया जाएगा। परीक्षा ओएमआर पद्धति से दो सत्रों में होगी। पहला सत्र सुबह 10 से 12 बजे तक और दूसरा सत्र दोपहर 2-15 से शाम 4-15 बजे तक आयोजित होगा। प्रदेश के सभी 54 जिला मुख्यालयों में कुल 365 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। परीक्षा को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाने के लिए इस बार सख्त सुरक्षा व्यवस्था लागू की गई है। परीक्षा केंद्रों पर प्रवेश के दौरान त्रिसंख्यी जांच प्रक्रिया अपनाई जाएगी, जिसमें बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण, प्रवेश पत्र की स्कैनिंग और हैंड हेल्ड मेटल डिटेक्टर से तलाशी शामिल है। परीक्षार्थियों को परीक्षा शुरू होने से कम से कम 90 मिनट पहले केंद्र पर पहुंचना अनिवार्य होगा। आयोग ने स्पष्ट

प्रदेशभर में 365 केंद्र, दो सत्रों में ओएमआर पद्धति से परीक्षा



किया है कि परीक्षार्थी केवल ई-प्रवेश पत्र, वैध पहचान पत्र, निर्धारित बॉल पेन और पारदर्शी पानी की बोतल ही साथ ला सकेंगे।

दिव्यांग अभ्यर्थियों को आवश्यक सामग्री लाने की अनुमति रहेगी। वहीं, परीक्षा में नकल रोकने

के लिए कड़े प्रतिबंध भी लगाए गए हैं। मोबाइल, स्मार्ट वॉच, ब्लूटूथ, कैलकुलेटर सहित सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण पूरी तरह प्रतिबंधित रहेंगे। जूते-मोजे पहनकर प्रवेश नहीं मिलेगा, परीक्षार्थी केवल चप्पल या सैंडल पहनकर आ सकेंगे। महिला स्टाफ द्वारा पूरी गरिमा के साथ की जाएगी। धार्मिक

विरोध करने पर हमला

शहर के लसूड़िया क्षेत्र में भी एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। यहां एक विवाहिता के सम्मान की रक्षा करना उसके पति के लिए भारी पड़ गया। लसूड़िया जलाशय के समीप लक्ष्मी नामक एक असामाजिक तत्व ने महिला के साथ अभद्र कृत्य किया। जब महिला के पति प्रिंस ने इस दुस्साहस का कड़ा विरोध किया, तो अपराधी ने आव देखा न ताव और प्रिंस पर चाकू से प्रहार कर उसे घायल कर दिया। घटना के पश्चात पुलिस ने पीड़ित का स्वास्थ्य परीक्षण करवाया और अपराधी के विरुद्ध प्रकरण दर्ज कर उसकी खोजबीन तेज कर दी है। इन दोनों घटनाओं ने शहर की सुरक्षा व्यवस्था और बढ़ते अपराधों पर चिंता उत्पन्न कर दी है।

आरोपियों की पृष्ठभूमि

- आरोपी विनित पहले एलाग्रा ट्रेडिंग कंपनी में शेयर मार्केट का काम करता था। छह माह से बेरोजगार था। मजदूरी और ठेला चलाने लगा था।
- उसकी बहन राधिका कपड़े की दुकान पर सेल्समैन थी। दोनों को कुत्ते बिल्ली पालने का शौक था। विनित के कहने पर राधिका बच्चों को लेकर गई थी। विनित ने दो दिन पहले बच्चों को गार्डन में देखा था।
- आरोपी ललित सेन ऑटो रिक्शा चलाता है। उसकी पत्नी तनीशा हाउस वाइफ है। दोनों को फिरौती की राशि में आधा हिस्सा देने की बात पर बच्चों को रखने के लिए राजी किया था।

बच्चों ने क्या कहा

बच्चे सम्राट ने कहा, मैं रोज गार्डन जाता हूँ। वहां राधिका दीदी भी एक-दो बार आई थीं। वह बिल्ली का बच्चा दिलाने का बोलकर ले गई थीं। रास्ते में भी उसके साथ एक भैया थे। जो मोबाइल पर जानवर दिखा रहे थे। नैतिक ने कहा कि मुझे कुत्ते, बिल्ली पालने का शौक है। राधिका को हमने घर पर कॉल कर बताने को कहा तो उसने मना कर दिया। राधिका बोली, बहुत सारे कुत्ते, बिल्ली दैंगे। सुबह घर छोड़े। उसने एक कमरे में दोनों को बैठा दिया था। जहां बार-बार लाइट बंद चालू हो रही थी। जब पुलिस आई तो पता चला कि राधिका और भैया हमें जबरन लेकर आए हैं। तुषार सिंह, एसीपी (थाना पलासिया) ने कहा कि चारों आरोपी एक दूसरे को लंबे समय से जानते थे। रात डेढ़ बजे के लगभग आरोपियों को पकड़ा था। विनित को बच्चों की जानकारी पहले से थी। उसी ने षडयंत्र रचा था।

नशेड़ी पुत्र ने पिता का गला रेटा, एक अन्य मामले में युवक घायल

अपराधिक घटनाओं का तांडव, आरोपी पकड़ से बाहर

इंदौर। मल्हारगंज क्षेत्र में पारिवारिक कलह ने खूनी रूप ले लिया, एक कलयुगी पुत्र ने अपने ही जन्मदाता पर जानलेवा प्रहार कर दिया। पुलिस विभाग को चिकित्सालय से इस घटना की जानकारी प्राप्त हुई, जिसके उपरांत दल ने पहुंचकर पीड़ित के कथन अंकित किए। वर्तमान में अपराधी पुलिस की पकड़ में है। प्रजापतिपुत्रा कुम्हार मोहल्ला निवासी रमेश कुमार नीमा बुधवार और गुरुवार की दरम्यानी रात अपने घर पर थे। तभी उनका पुत्र जयंत उर्फ मोनु अत्यधिक मदिरापान करके घर लौटा। घर पहुंचते ही उसने अपने माता-पिता के साथ अभद्र व्यवहार और गाली-गलौज आरम्भ कर दी। जब रमेश कुमार और उनकी पत्नी मधु ने उसे शांत करने का प्रयास किया, तो क्रोध में आकर जयंत ने धारदार शस्त्र से अपने पिता की गर्दन और गले पर हमला कर दिया। पिता को लहलुहान देख उनकी दोनों बेटियों ने साहस दिखाया और बीच-बचाव कर पिता को तुरंत निजी चिकित्सालय पहुंचाया। घाव गहरे होने और अत्यधिक रक्तस्राव के कारण चिकित्सकों ने उन्हें बड़े अस्पताल भेजने का परामर्श दिया,

हत्याकांड का खुलासा: निलंबित पुलिसवालों ने आरोपी को पकड़ा

आरोपी प्रमोद पुत्र फूलचंद वैद्य ने एमआर-10 स्थित



शराब दुकान से शराब खरीदी थी। वहीं उसकी मुलाकात कड़वा से हुई। कड़वा ने उसके साथ बैठकर शराब पीने की जड़ की और इस दौरान अपशब्द भी कहे। इससे नाराज होकर प्रमोद उसे अपने साथ वाहन पर बैठकर ले गया। कुछ दूरी पर पहुंचने के बाद नशे की हालत में उसने कड़वा को वाहन से गिरा दिया और पत्थर से उसके सिर पर वार कर दिया, जिससे उसकी मौत हो गई। घटना के बाद आरोपी मौके से फरार हो गया। पुलिस को जांच के दौरान शराब दुकान के निगरानी कैमरों में आरोपी प्रमोद कड़वा को अपने साथ ले जाते हुए दिखाई दिया, जिससे मामले की कड़ी जुड़ती गई और आरोपी तक पहुंच बनाई गई।

वस्तुओं और आपसुपूर्ण का सम्मान पूर्वक परीक्षण किया जाएगा। आयोग ने सभी परीक्षार्थियों से निर्देशों का सख्ती से पालन करने की अपील की है, ताकि परीक्षा शांतिपूर्ण और व्यवस्थित रूप से संपन्न हो सके।

हत्याकांड का खुलासा: निलंबित पुलिसवालों ने आरोपी को पकड़ा

शराब विवाद में मजदूर की हत्या, सिर कुचलकर की वारदात

इंदौर। लसूड़िया क्षेत्र में मिले अज्ञात शव के मामले का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। 17 अप्रैल को स्क्रीम नंबर 136 इलाके में 45 वर्षीय व्यक्ति का शव मिला था, जिसकी सिर कुचलकर हत्या की गई थी। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में आरोपी को पकड़ लिया है। पुलिस उपायुक्त कुमार प्रतीक के अनुसार, मृतक की पहचान कड़वा जी पुत्र राजाराम दगाड़ के रूप में हुई, जो खरगोन जिले के भीकनगांव का रहने वाला था। वह इंदौर के हीरानगर स्थित लाहिया कॉलोनी में किराए से रहकर मजदूरी करता था। जांच में सामने आया कि 16 अप्रैल की रात

दूसरे अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक के परिजनों ने शुक्रवार को उसके पति शक्ति प्रजापत पर गंभीर आरोप लगाए हैं। भाई के अनुसार, महिला बेसुध हालत में मिली। उसकी पहचान पलासिया निवासी सीमा उर्फ नीता प्रजापति के रूप में हुई। बताया गया कि वह गुरुवार को अपने घर से अचानक लापता हो गई थी और उसी दिन कृष्णपुरा इलाके में पड़ी मिली। परिवार को जानकारी मिलने पर उसके भाई अमन उसे अस्पताल लेकर पहुंचे। पहले एक निजी अस्पताल और फिर

पुस्तक समीक्षा

गौरव गौतम
समीक्षक

लालित्य शरणं व्रज' डॉक्टर गरिमा संजय दुबे के निबन्धों का संग्रह है जो उनकी कृति 'समर्पण' के बाद उनके लालित्य लेखनी का विस्तार है जिसमें निरंतरता भी है और नवोन्मेषता भी। इस निबन्ध का शीर्षक भगवद्गीता के अंतिम अध्याय के 66वें श्लोक का स्मरण कराता है जिसमें श्रीकृष्ण अर्जुन की शंका का समाधान करते हुए कहते हैं कि केवल मेरी शरण में आओ-मामर्क शरणं व्रज। श्रीकृष्ण से ज्यादा लालित्य किसमें होगा जिनमें सभी कलाएँ विद्यमान है या ऐसा कहे कि सभी कलाएँ उनसे ही उद्भूत होती हैं। लालित्य निबन्ध विधा भी श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व की तरह ही है जिसमें कल्पना और रागात्मकता है जिससे यह विधा विषय से जुड़ी रहकर भी स्वतंत्र होती है उससे बंधती नहीं है।

यह कृति बतियाते हुए एक सांस्कृतिक यात्रा पर ले जाती है जहाँ पाठक पर्व की रम्यता, दूब की पावनता, कुश की कठोरता, हरसिंगार का विनय, अपराजिता की नीलिमा, मंजरी की सुगंध, आम की महक, रोटी के स्वाद, उत्सव की समृद्धि, लोक की जड़ में निहित चैतन्यता, कुंभ की आस्था, रात की धुन, पावस की फुहार, शरद की चाँदी, नदी के बहाव, त्रिवेणी की लहर, बंशी के स्वर, राधा का समर्पण और कन्हैया से उनकी एकात्मकता, शिव के वैराग्य और लास्य आदि से परिचित ही नहीं एकरस भी होता है। निबन्धों के कथ्य दृष्टि को बांधने के साथ-साथ श्रवण और घ्राण से सम्बन्धित इंद्रियों को भी सक्रिय कर देते हैं। पाठक वर्तमान में खड़े होकर अतीत को निहारते हुए भावी जीवन के लिए राह पाता है वह अपने परिवेश को 'देखने' में सक्षम हो जाता है। यह कृति संस्कृति के बिखरे हुए कर्णों को समन्वित करने का एक प्रयास है जो बताती है कि धरोहर भूतपूर्व नहीं बल्कि अभूतपूर्व होती है। अपने प्रकृति और परिवेश के जिन उपदानों पर व्यक्ति द्वारा पहले नोटिस भी नहीं लिया जाता रहा है इस कृति से गुजरकर वह उनके लिए संवेदनशील होंगे। उन्हें परखने में सक्षम होंगे।

उलटपंथी विचारधारा और औपनिवेशिक प्रभाव से ग्रसित मानसिकता ने भारतीय संस्कृति को 'बनाम' के रूप में देखा है जिसके कारण शैव

बनाम वैष्णव के अनुरूप साहित्य को परखा गया है जिसे पालने पोसने का कार्य शिक्षा व्यवस्था द्वारा किया गया। गरिमा जी ने इस कृति में बताया है कि शिव और विष्णु विरोधी नहीं 'युग्म' है जो सृष्टि का पालन और संरक्षण करते हैं। 'उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ गोविंद' निबन्ध हरि-हर के आपसी सम्बन्ध को व्यक्त करने वाला है जिसका विस्तार 'दो यात्रा, दो बिंब, एक फल' निबन्ध में भी है जिसमें अमरनाथ और जगन्नाथ की यात्रा के बारे में बताया है जो आषाढ़ माह में शुरू होती है। 'उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ गोविंद' का कथ्य यह भी बताता है कि जीवन में प्रगति और उत्थान के लिए निरंतर जाग्रत रहने और प्रबंधन की आवश्यकता है।

प्रत्येक देश की संस्कृति अन्य देश से संवावरत होती है किंतु उसकी विशिष्टता भी होती है जिसे गरिमा जी ने 'तितिक्षा रूपी तृण-दूर्वा और कुश' में बताया है। दूर्वा की यत्र-तत्र-सर्वत्र व्याप्ति के कारण अंग्रेजी में उसे डेविल्स ग्रास कहते हैं जबकि भारत में ऐसा कोई शुभ कार्य नहीं जिसमें दूर्वा का प्रयोग न होता हो। गणेश भगवान को तो यह विशेष प्रिय है। इस निबन्ध में तुलसीदास, विद्यानिवास मिश्र और कुबेरनाथ राय के माध्यम से दूर्वा की महत्ता को रेखांकित किया गया है। यह निबन्ध यह भी बताता है कि भारतीय संस्कृति



के केंद्र में चराचर जगत है केवल मानव नहीं। मानव का प्रकृति से द्वैत नहीं; अद्वैत का सम्बन्ध है। मानव, प्रकृति का हिस्सा है उससे अलग नहीं है। इस कृति में लेखिका ने हरसिंगार, अपराजिता जैसे फूलों के माध्यम से भारतीय परिवेश और भारतीय ज्ञान मीमांसा को जानने और परखने का उपक्रम किया है कि प्रकृति की हर शय में स्मृतियों की अनेक परत छुपी हुई है जिन्हें संवेदना के स्पर्श से अनावृत किया जा सकता है।

इस कृति का कुंभ यात्रा से सम्बन्धित 'आस्था, अनुभूति, अनुभव की त्रिवेणी- महाकुंभ' निबन्ध इस तरह से लिखा गया है कि इसका शब्द-शब्द भीतर समा जा जाने वाला है। पिछले शब्द की कुक्षी से निकला अगला शब्द जब वाक्य बनकर अपना अर्थ संप्रेषित करता है तब ऐसा लगता है कि त्रिवेणी के पावन तट पर खड़े होकर हम निहार रहे हैं।

पर्यटक और तीर्थारंजन में जो भावगत अंतर होता है लेखिका ने उसे भी प्रस्तुत किया है जो आज के समय को आईना दिखाता है जो कि साहित्य का मूलभूत कार्य है कि यह समय और समाज को विश्लेषण करें कि वह अपनी संवेदना को टटोले। तीर्थ को लेकर जो 'लोक' में भाव है उसे गरिमा जी ने प्रस्तुत किया है जिसे सभ्यता की कालिमा लीलेने को आतुर है। इसे निम्न उद्धरण में समझा जा सकता है-

→ हम और आप तो तीर्थ में भी विश्राम और सुविधा ढूँढते हैं, यह

लोकधारा कुछ नहीं चाहती। बस अपनी माँ की गोद का स्पर्श चाहती है, उन्हें आपसे न कोई सुविधा चाहिए, न वे किसी कष्ट का वर्णन करते हैं। उनके अनुसार यात्रा में उठसाय गया कष्ट भी तप है, केवल तीर्थ में पहुँच कर स्नान-दर्शन करना ही तीर्थ नहीं होता। पूरी यात्रा ही तीर्थ होती है, यह मानकर मीलों पैदल चलकर यात्रा करने का इतिहास रहा है, तभी तो दुधमुँह बच्चों को गोद में लेकर माँएँ पहुँच जाती हैं संगम, अशक्त बुजुर्गों को लेकर चलते हैं बेटा-बहू। धन्य है इनकी आस्था, धन्य है इनका भाव। सच पृथ्वी तो मुझे तो इन लोगों का दर्शन ही तीर्थ का फल मालूम हुआ।

उपर्युक्त कथ्य एक दीप ज्योति की तरह है जो मानस की मलीनता को हटाने के लिए प्रेरित करता है कि हम लोक के वास्तविक रूप को समझ सकें न कि अपनी पिछड़ी हुई नजर से उसका अवलोकन करें। इस निबन्ध में कुंभ के बारह वर्ष के संदर्भ के में यह कथन कि प्रत्येक बारह वर्ष में नवीनीकरण का प्रयास भी, जागृत करने का प्रयास भी। परंपरा के प्रवाह को समझने में मददगार है। ऐसे ही गंगा के प्रवाह के संदर्भ में गरिमा जी की यह टिप्पणी बड़ी सारगर्भित और सार्थक है कि यह तो नित्य नूतन और चिर पुरातन प्रवाह है। संशय भरा मन कहता है किंतु इसका अर्थ यह तो नहीं कि हम उसकी पवित्रता का दुरुपयोग करें, उसे मलिन करते रहें। गंगा का होना भारत का होना है, वह भारत की सुमुष्मा नाड़ी है जिसमें प्राण प्रवाहित होते हैं।

व्यक्ति-व्यंजन शैली में लिखे गए निबन्ध की भाषा प्रवाह युक्त है। विश्लेषण के बीच में सूत्र वाक्य का आना पढ़ने वाले को रोचकता है और मनन करने को मजबूर करता है। एक उल्लेख, आगे के पाठ को पढ़ने की गति देता है। भाषा की तरलता और छोटे वाक्य विचार को सहज और बोधगम्य बनाते हैं जो पाठक के मानस को संस्कारवान बनाने में सहायी है।

पुस्तक- लालित्य शरणं व्रज
लेखक- डॉ. गरिमा संजय दुबे
प्रकाशक- शिवना प्रकाशन प्रकाशन

राजकुमार कुम्भज की कविता?

भीतर सारा, समुद्र खारा

शून्य से प्रारंभ शून्य में ही पूर्ण

वह जो भी मिलता है तिनका-तिनका प्रेम में ले जाता है अधिकतम से कम-कम की ओर जिसका नहीं कोई ओर, नहीं कोई छोर खोया तो पाया, पाया तो खोया फिर-फिर था फेर था, उलझनें थीं, चक्र था, समझने में जबकि न आगे, न पीछे, न उत्तर, न दक्षिण समझने जैसा जरा कुछ भी था ही नहीं



एक प्याला विष था, वह था, मैं था दिगंत में एक आग थी, एक जंगल था धधकता हुआ एक तबियत थी, एक हवा, एक दृढ़ता और एक धुन थी कि सारंगी की पार जैसी गूँजती ही रहती थी इस तरफ, उस तरफ कोई नाव नहीं, कोई तट नहीं, कोई छँव नहीं सिर्फ एक ऊफनती नदी में अनगिनत लहरें बाहर-बाहर चाक-चौदर अमृत-कलश भीतर सारा, समुद्र खारा.

सच अब भी है संभावना

एक बेहूदा तमाशा है जिंदगी

झूठ बोलता हूँ तो बड़ता जाता है भरोसा सच बोलता हूँ तो घटती जाती है मित्रता? झूठे बन गये, बनते गये चक्रवर्ती सम्राट सच यही है कि सच अब भी है संभावना कुछ सोचता हूँ कि कुछ सोचकर बोलूँ मैं सोचकर बोलता हूँ तो गिरफ्त है सरकार की सच है कि हर सच है सरकार की गिरफ्त में तू क्या, मैं क्या, ये क्या, वो क्या?

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रियल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बांबे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी संपादक
अजय बोक्लि
संपादक (सम्यग्प्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subhaversere@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं।
इन्तरे समाचार पत्र का सम्बन्ध होना आवश्यक नहीं है।

सीक्रेट एजेंट

प्रज्ञा मिश्रा



वी सीरीज 'नाकोस' में वाग्मर मौरा दिखाई दिए थे। पिछले बरस फिल्म 'सीक्रेट एजेंट' के अवार्ड्स और ऑस्कर नामिनेशन ने उन्हें सितारा बना दिया। जब कान फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट एक्टर का अवार्ड मिला तो शूटिंग कर रहे थे। वहीं से शूटिंग अदा किया। फिर यह नाम हर उस कोने में गुंजा, जहाँ बेहतरीन फिल्मों की बात होती है। इस महीने 'टाइम मैगजीन' ने उन्हें फिल्म 'सीक्रेट एजेंट' के लिए 'कवर' पना दिया है।

ब्राजील की यह फिल्म 1970 के दशक में फौज की तानाशाही पर है। तानाशाही का विरोध करने वाली फिल्में शायद ही कभी हंसी-मजाक का मौका देती हैं और किसी इंसान के कटे पेर को मजाक में बदलना तो और भी मुश्किल है। ब्राजील के फिल्मकार क्लेबर मेंडोका फिल्हो ने आजाद-ख्याल नज़रिया अपनाया है और दहशत के बीच ही हंसी-खुशी के पल ढूँढ निकाले हैं। ब्राजील की सैनिक तानाशाही (1977) में शुरू होने वाली यह फिल्म राजनीति से दूर, धूल और जमीन पर है, जहाँ इंसान जीते हैं। कुछ नाँव कार्निवल मनाते हैं, धूल में खुशी से नाचते हैं, कुछ हिंसा का शिकार हो जाते हैं।

दहशत के बीच कुछ मुस्कान भी ... !



मार्सेलो के आसपास हाशा है, उदास किरदार, जिसे वाग्मर मौरा ने खूबसूरती से निभाया है। यूनिवर्सिटी का पूर्व प्रोफेसर अटलांटिक तट पर बसे पनाह की तलाश में

है। वहाँ नया घर बसाता है और धीरे-धीरे उसकी अतीत की जिंदगी भी साफ होती जाती है। पत्नी फातिमा की मौत हो चुकी थी,

बच्चा फर्नांडो नाना-नानी के साथ रहता है। 'द सीक्रेट एजेंट' समाज का डर दिखाती है। हर किरदार अनांखा है और उसे पूरी गरिमा के साथ इंसानियत दी है, चाहे वह हिटमैन हो या मासलीयत दिवंगत पत्नी हो, दिल को चीर देने वाले सीन हैं।

'द सीक्रेट एजेंट' को मार्सेलो का बच्चा देखना चाहता है, भले ही उसका पोस्टर देख बुरे सपने आते हों। मेंडोका की यह फिल्म भी स्पिलबर्ग की तरह है। बढ़ते डर के साथ सोचते हैं कि मार्सेलो कभी पकड़ा जाएगा और अगर हाँ, तो कब ? यहाँ खतरा 'राजनीतिक शाक' से है, मतलब फौजी तानाशाही से, जहाँ अमीर और ताकतवर समझते हैं कि जो भी उन्हें जरा सा भी नाराज करे, उसे कुचल डालें। पीछे पड़े लोगों से

बचते मार्सेलो ऐसी सड़क पर पहुँच जाता है, जहाँ पूरे जोश से जश्न मना रहे हैं। वह झिंक लेता है और नाचने लगता है। तब एहसास होता है कि अगर सत्ता में बैठे लोग उसे मारने की कोशिश न कर रहे होते तो उसकी दुनिया कितनी खुशहाल हो सकती थी। 'मूबी' पर ये फिल्म ज़रूर देखें।

लघुकथा: अंत भला, तो सब भला

रामेश्वरम तिवारी

जगतपति क्षीरसागर में शेणनाग की शय्या पर आँखें बंद किए, दोनों पैरों को फैलाए, आराम से लेटे हुए हैं। वहीं पर सागर के स्वामी वरुणदेव की पुत्री और देवी लक्ष्मी उनके चरणों को चाँप रही हैं। तभी देवर्षि नारद ने हड़बड़ाते हुए, दरवाजे पर बिना दस्तक दिए, जगतपति के शयन-कक्ष में प्रवेश किया और देवी लक्ष्मी को संबोधित करते हुए- 'देवी भूलोक में नारी शक्ति पर बहुत बड़ी विपदा आन पड़ी है और जगतपति है कि निश्चित होकर सोए हुए हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इन्हें अभी और इसी वक्त उठाएँ, वरना देर होने पर बड़ा अनर्थ हो जाएगा।' देवी लक्ष्मी ने देवर्षि नारद को बैठक

में जाकर प्रतीक्षा करने को कहा और जगतपति के कान में जाने क्या मंत्र फूँका कि वे एक झटके में उठ खड़े हुए और बोले- 'देवी आपने मुझे गहन निद्रा से क्यों और किसलिए जगाया है।' देवी ने मुस्कुराते हुए अपनी मृदुल वाणी में कहा- 'स्वामी, आपके जो विश्व भ्रमणाचारी संवादादाता हैं वो कोई महत्वपूर्ण संदेश देने के लिए आए हैं। अब कृपाकर जल्दी से उठिए अपने हाथ, पैर, मुँह को धोइए और देवर्षि से मिल लीजिए। देवर्षि भी गजब करते हैं न दिन देखते हैं, न रात। बिना पूर्व सूचना के जब मज्जी हुई, मुँह उठाया और नारायण ! नारायण ! का जाप करते हुए चले आते हैं।' देवी लक्ष्मी की बातों को जगतपति

लगभग अनसुना करते हुए सीधे स्नानागार में पहुँचे और चंद लम्हों में तरो-ताजा होकर बैठक में पहुँच गए। देवर्षि ने उत्कर्ष, करबद्ध प्रणाम किया और बिना किसी औपचारिकता के खड़े-खड़े ही शुरू हो गए। 'प्रभु ! वो बात ऐसी है कि भूलोक पर आर्यावृत का न्यायप्रिय सम्राट नारी शक्ति को सत्ता में भागीदारी के लिए तैतिस प्रतिशत आरक्षण का विधेयक पास करवाना चाहता था, पर विपक्षी दलों के विरोध के कारण विधेयक पास नहीं हो सका। परिणामतः एक बार फिर से नारी शक्ति अपने अधिकार से वंचित रह गई।' देवर्षि की चिंता को सुनकर जगतपति थोड़ी देर के लिए गंभीर हुए, छत की ओर उन्मुख होकर, कुछ देर के लिए सोचते रहे

और फिर नितांत शांत स्वर में बोले- 'देखो देवर्षि 'नारी शक्ति वंदना' विधेयक को लेकर तुम्हारी चिंता वाजिब है, पर इस मामले में, मैं तुम्हारी किसी प्रकार की मदद नहीं कर सकता। चूँकि इसमें देवों का हित जुड़ा हुआ है। उन्होंने ही यह सारा प्रपंच रचा है। जिस तरह से त्रेतायुग में सरस्वती के जरिए राजा दशरथ की रानी कैकेयी की बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया था, ठीक उसी तर्ज पर देवी सरस्वती ने समस्त विपक्षी दलों के सदस्यों की बुद्धि का स्तंभन कर दिया यानी 'विनाश काले विपरीत बुद्धि।' अतः मेरा कहना मानिए और मेरी तरह आप भी कुछ दिनों के लिए निश्चित होकर, खुँटी तानकर सो जाइए। वो कदावत है न कि अंत भला, तो सब भलाज !'

व्यंग्य

सिंधु कन्होआ

लेखक व्यंग्यकार हैं।



क्रैडिटखोरी एक लाजवाब हुनर है, क्रैडिटखोर बंदों की प्रतिभा को हम रोजमर्रा के एक आम उदाहरण से समझते हैं। आमतौर पर पतंगें उड़ने उड़ने के हर मौसम में जहाँ आसमान रंगबिरंगी पतंगों से अटा रहता है तो वहीं धरा दो तरह के पतंगबाजों से सुसज्जित रहती है। एक वर्ग वह जो, अपने हुनर को सजगता और चाव से साधकर अपने फुर्तीले अंदाज में दूसरी पतंगों से पेंच लड़ाकर काटता है, दूसरे वर्ग के इनसे कहीं अधिक पारंगत हुनरबाजों का खेमा जो पतंगबाजी की इस प्रतिभा प्रदर्शन के तमाम झमेले से दूर पतंग कटने के इंतजार में आरामतलबी के साथ अपनी अपनी छतों छज्जे पर अलसाया सुस्ताया आँखें बिराए बैठे होता है, पर ज्योंही पतंग कटती है ये दूसरे खेमे के चतुर सुजान शूरवीर बला की फुर्ती के साथ, उस कटी पतंग पर हक जताने की खातिर धक्का मुक्की करते, हँफते गिरते पड़ते दौड़ लगा देते हैं बस कुछ ऐसी ही फुर्ती श्रेयभक्षी भी दिखाते हैं जब जब कोई चुनौतीपूर्ण काम, जिम्मेदारी या मिशन पूरा होता है इनकी फौज भी इसी फुर्ती के साथ सारा क्रैडिट गप करने की खातिर, जी जान छोड़कर दौड़ लगा देती है। पतंग उड़ाने का अपना कौशल है तो पतंग लूटना भी कोई कम टैलेंट

का काम नहीं, बस इसी तरह पूरे समर्पण, निष्ठा और परिश्रम के साथ किसी काम को अंजाम देने में जो पुरुषार्थ लगता है, फटाक से झपट्टा मारकर उसका क्रैडिट बटोरने में भी कोई कम प्रतिभा नहीं लगती है।

एक नामी गिरामी हस्ती के मूल कथन को यदि थोड़ा बट देकर, थोड़ा उमेठकर व्यंग्य को मुलम्मा चढ़ाने की कोशिश की जाए तो लम्बो लुआब यह कि इस फानी दुनिया में दो किस्म के प्राणियों का समूह रहता है, एक भरपूर शिद्व और समर्पण के साथ किसी जिम्मेदारी को अंजाम देने वाला भरोसेमंद समूह और दूसरा, सारा क्रैडिट गटकने में सिद्धहस्त हुनरबाजों का खेमा। जहाँ पहले समूह में भलेमानसों का टोटा ही बना रहता है वहीं दूसरे समूह में बेहिसाब रेलमपेल, धक्कामुक्की और काँव काँव और आत्ममुश्ता के खासे सिलसिले हैं। हालाँकि वह नामचीन हस्ती लंबी रेस का घोड़ा साबित होने के मकसद से पहले

ही समूह में बने रहने की सलाह देती है मगर इतना धीरज, सेवाभाव, सहनशक्ति और कर्तव्यपरायणता का जब्बा भला कितनों के पास है? इसलिए कर्तव्यपालन के समय अकर्मण्यता और खुदगर्जी का तंबू ठोक लंबी तानकर आराम फरमाने वाले तमाम अलसाए सुस्ताए मौकापरस्त (श्रेयभक्षी) जीवधारी वाहवाही की पतंग लूटने कूट फाँदकर सामने आ जाते हैं। शायद इन्हीं क्रैडिटखोरों से प्रताड़ित होकर एक नामचीन शायर ने अपनी व्यथा को शब्द देते हुए कहा है

मैं पर्वतों से लड़ता रहा और चंद लोग गीली जमीन खोदकर फरहाद हो गए। दत्तात्रेय जी ने कुदरत से चुने गए अपने चौबीस गुरुजनों का उल्लेख किया है तो इन श्रेयभक्षी समूह ने भी पशुपक्षी प्रजाति से अपने लिए कुछ रोलमॉडल खोज निकाले हैं जो यथासमय इन दिग्गजों के सामने अपना आदर्श स्वरूप प्रस्तुत कर इनके खुद बखुद ओढ़े गए

महानता के सेहरे में चार चांद टांकते रहते हैं। इन गुरुजनों में शीर्ष स्थान पर है, सुर्ग की जमात जिसकी यह गलतफहमी सदियों से बरकरार है कि सूरज दादा की गुडमार्निंग उसी की कुकड़ कू से होती है। तमाम पौराणिक मान्यताओं, धार्मिक आस्था और वैज्ञानिक आधारों को धता बताकर यह जमात, सालों साल से भार होने का सारा क्रैडिट बटोरती आ रही है। इनकी अगली गुरु है टिटहरी रानी जो इस भ्रम में जीती आई है कि उसके शीर्षासन लगाते ही तूफान थम जाता है, इसी मुनालते का शिकार होकर वह ताँजिंदगी अकड़ती फिरती है। इनकी तीसरी गुरु होती है छतों, छपरों से लटकी छिपकली जो हम गुमान में जीती है कि सारी बिल्डिंग का बोझ हम उठाते हैं....।

ये क्रैडिटखोर बातों की बाजीगी और झुंझबाजी में भी बखूबी पारंगत होते हैं। हर श्रेष्ठ परिणाम, सुखद समाधान और शुभ लाभ की

कविता

अब कहाँ वो गांव है



विजय जोशी

पूर्व गुप महाप्रबंधक, भेल

छोड़ आया था जिसे एक सुंदर मोड़ पर रखान बनकर सो गया अब कहाँ वो गांव है?

छह में जिसके तले बैठते थे सब भले उस रक्तवर्णी गुलमुहर की अब बची कब छँव है अब कहाँ?

रही अमराई नहीं पुरवा तक बही नहीं मोर भी हैरान है गुम गया जो ठाव है अब कहाँ?

मौसम भी रुठ है अपनों से टूटा है नदियाँ हैरान हैं अब कहाँ वो नाव है अब कहाँ?

शहरों की चाल है अब कहाँ चौपाल है संगी सब बिछड़ गए अब कहाँ वो चाव है अब कहाँ?

सज गई है माँझियाँ खो गई पाण्डियाँ दौड़ मिल जाएं गले अब कहाँ वो पांव है अब कहाँ?

सुनापन उतरा है जीवन भी बिखरा है खो गया सब कुछ यहाँ अब कहाँ वो भाव है अब कहाँ?

मोटी मलाई पर धम्म धम्म कूदकर श्रेय की डुगडुगी बजाने लगते हैं और अपने इस त्वरित झपट्टामार पराक्रम से भोलेभाले असली हकदारों को पटखनी देकर नीचे की पनीली छछ में बिलबिलाने को मजबूर कर देते हैं। सामूहिक चुनौतियों के शानदार समापन के वक्त, इन श्रेयभक्षियों का, कुल जमा क्रैडिट अकेले ही गप कर जाने का, अद्भुत हुनर भरभराकर बाहर निकलता है। ऐसे मौकों पर इनका पराक्रम देखने लायक होता है कि काम को अंजाम देते वक्त कतार में सबसे पीछे चल रहे ये शूरवीर बला की फुर्ती से झपट्टा मारकर किसी फिल्मी कोरस के केंद्र में टुप्का लगाते हीरो की भूमिका में आ जाते हैं।

इस खेमे के कुछ चुनिंदा जुमले होते हैं मसलन खैर मनाओ अमुक संस्था, इकाई या खंड जाते हैं खुदा ने हमें भेजा करना सिर्फ मेरी वजह से है या बाकी सब कमियाँ सिर्फ मेरी महानता के आवरण में छुपी रहती हैं। इनके इस जुबानी जमाखर्च का कुल जमा जोड़ यह कि यदि इस धरा पर, इन महान विभूतियों का अवतरण न हुआ होता तो हाहाकार मच जाता, कयामत ही आ जाती ... पर सच तो यह कि ऐसे मुनालते पाल पाता कर जाने कितने गुणगुनरु इस फानी दुनिया से कूच कर गए और एक तिनका भी टस से मस नहीं हुआ, आप ही बताइए हुआ क्या ?

भारतीय चित्रकला में रवि वर्मा का स्थान

कला- जन्मदिन विशेष

पंकज तिवारी

कला समीक्षक



वो अपने आस-पास किसी को भी नहीं रहने देता, ध्यान भंग की खाल ओढ़कर वो खुद को इस प्रक्रिया से अलग कर लिया था बावजूद इसके अधिकतर लोगों का मानना था कि रवि वर्मा को तैल रंग की शिक्षा थियोडोर जॉनसन से ही मिली। मामला संशयग्रस्त है।

जॉनसन ने खुद को बचाने का यह कदम ईश्या बस उठाया था रवि वर्मा के आगे भविष्य में उसे अपनी जमीन खिसकती नजर आई, कह पाना मुश्किल है पर एक बात तो साफ है कि मुश्किल हालात के बाद ही खुशनुमा प्रभात का आनंद है अतः मुश्किल घड़ी में भी हाथ पैर मारना बंद नहीं करना चाहिए युवा रवि वर्मा ने भी यही किया और मालाबार स्कूल ऑफ पेंटिंग में भी दाखिला के प्रयास में जा लगे यहीं भी निराशा ही हाथ लगी। अब तक अपने अथक प्रयासों और लगातार निराश होने के चलते मानसिक रूप से कमजोर महसूस करने लगे थे रवि वर्मा पर चित्रकला में नवीन सृजन में निरंतरता बनी रही इस बीच ही इनके चित्र लगातार बनते रहे और अथक प्रयास, एकाग्रचित्त मन के प्रयासों का फल तथा महाराजा के सहयोग से पाश्चात्य कला चित्रों पर प्राप्त कुछ चित्रकला संबंधित पुस्तकों के चित्रों को देखकर, गहन अध्ययन कर ये चित्रों की बारीकियों को पकड़ पाये और प्रयत्न के बल पर ही खुद एक संस्थान बन बैठे फलतः पाश्चात्य के ही कला के अधिकतर विद्वानों को कहना पड़ा कि लाजवाब गुणों के धनी हैं रवि वर्मा। देखते ही देखते इनके चित्र अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में भी सराहे जाने लगे और स्वर्ण पदक जैसे पुरस्कार हासिल करने में सफल रहे। राजा रवि वर्मा द्वारा स्थानीय शैलियों का भी खूब अध्ययन किया गया।

परिचित चेहरों, उनके आसपास रहने वाले लोगों को पटल पर स्थापित कर उनमें दिव्यता भर कर वही रूप देवी देवताओं के हेतु प्रयोग किया गया?। उनके अधिकतर चित्रों

में सुगंध थी जिसको लेकर रवि वर्मा के बारे में तरह-तरह की बातें हवा हुई थी और जिसकी वजह से वर्मा जी को कई जगह घेरा भी गया था। चित्र सीता हरण में उन्होंने सीता के रूप में अपने ही पोती की छवि को अंकित किया था। कलाकार राजा रवि वर्मा की माँ जो स्वयं कथकली-



कवयित्री व चित्रकार थीं, मणिप्रवालम, पार्वती स्वयंवरम् जैसी विख्यात कृति थी जिनकी तथा पिता संस्कृत भाषा एवं आयुर्वेद के विद्वान, का असर था कि अब तक रवि वर्मा

के काम का सिलसिला जोर पकड़ चुका था पर भटकन भी कम न थी विषय को लेकर ऊहापोह जैसा वातावरण विद्यमान था। उनका मॉडल उनके आसपास से ही होता था। वह एक ऐसे कलाकार थे जो कैनवास पर ऑयल कलर में काम करने वाले पहले भारतीय कलाकार बनें।

भारतीय कला जगत में, तैल रंगीय यथार्थता को लाने का श्रेय भी इन्हीं को जाता है। युरोपीय यथार्थवादी शैली को भारतीय रूप में प्रस्तुत कर देना धीरे-धीरे इनके लिए आसान होता गया। इनके चित्रों में शबूह चित्र, सामाजिक संदर्भों से युक्त चित्र और जग जाहिर धार्मिक चित्र प्रमुख थे। राष्ट्रीयता संबन्धी इनके चित्र भी कम नहीं थे जिनसे अंग्रेज भी खार खाये हुए थे। बाल गंगाधर तिलक, रानी लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप और शिवाजी जैसे जननायकों के चित्र बनाकर वर्मा जी लोगों में देशप्रेम की भावना को भी उजागर करने में सफल हुए और आंदोलनकारी लोगों के बीच भी सम्मानीय बन गये थे साथ ही महंगे कलाकार भी। कहा जाता है कि अपने पोर्ट्रेट बनवाने के लिए लोगों को इनके हैं कर देने का महीनों इंतजार करना पड़ता था। रेखांकन और अपने चित्रों को महान बनाने के लिए, चित्रों में जीवंतता लाने के लिए, चित्रों में सजीवता लाने के लिए इन्होंने अनेक शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन किया। वेद-पुराण, उपनिषद्, चित्रसूत्र, नाटक, साहित्य आदि के अध्ययन से भविष्य में बनने वाली कृतियों की रूपरेखा तय हो सकी तथा अपने छोटे भाई के साथ विभिन्न स्थानों पर जाकर रहने-सहन, वेष-भूसा का भी उन्होंने बड़े ही बारीकी के साथ अध्ययन किया। सांस्कृतिक परंपरा, वस्त्रों के पहनावे के नये-नये ढंग, चेहरों के बनावट, भाव, आभूषण और अलग-अलग स्थानों के पृष्ठभूमियों, पौराणिक विषयों पर गहनता के साथ काम किया गया। मेहराब, झोंकियां,

महलों के रंग, अलंकरण, आदि को अलग-अलग स्थानों पर देख-समझ लेने के बाद उसमें राष्ट्रीयता के भाव को समावेशित करने के बाद कृतियों में उतारे हैं। समाज पर नाटक मंडलियों के प्रभाव का भी गहन अध्ययन करने के बाद इन्होंने अपने चित्रों का रूप, का रंग, अपने चित्रों के पीछे का बैकग्राउंड, अपने चित्रों के भाव-भूमिमा, लय-छंद ये सारे गुण ये अपने अध्ययन से ही सम्भव कर पाए और यही सारा अध्ययन जो इनका अपना था, इनकी अपनी विशेषता बन कर उभरी जिसके फलस्वरूप इनके मस्तक पर केनेक्टर को लेकर शास्त्रीयता परक भावनाएं पनप सकीं। कहा जाता है कि यात्रा के बाद इनके चित्रों में बैग्राउण्ड के भी दर्शन होने लगे थे हालांकि बैग्राउण्ड बनाने का कार्य इनके भाई का होता था। पूरा परिवार ही कलाकार था ऐसा लगता है।

संस्कार और संस्कृतियों के विशाल पटल पर चमकता भारत जहाँ? भरतमुनि, पतंजलि, आर्यभट्ट जैसे लोगों का जन्म हुआ है, अर्जुना, एलारा, खजुराहो, कोणार्क जैसी धाती से भरी पुरी धरा भारत को, लगभग 1000 पृष्ठों के वैश्विक कला पर पुस्तक लिखते हुए भारतीय कला को महज कुछ शब्दों में समेट दिया गया मतलब कि जहाँ ईश्या हो या जो समझ में ही न आये उस पर बात करने से अच्छा या उस पर और अधिक मेहनत करने से अच्छा उस पर बात ही न करी जाय वाली पद्धति पर किताब द आउट लाइन ऑफ आर्ट तैयार हुई जहाँ भारतीय कला के साथ अन्याय साफ तौर से दिखता है ऐसे समय में कलाकार राजा रवि वर्मा जी के चित्रों पर अच्छे समीक्षा की उम्मीद बेइमानी सी प्रतीत होती है। आम भारतीयों के निगाहों में अपने कला के जरिए रच-बस जाने वाले राजा रवि वर्मा गाहे-बगाहे समीक्षकों के भी अच्छे बुरे दौर से गुजरें हैं।

विचार

प्रतिभा मिश्रा

सेवानिवृत्त प्राचार्य जवाहर विद्यालय



शिक्षा का अर्थ केवल साक्षरता या किताबी ज्ञान नहीं है, बल्कि एक कोमल मन को भविष्य के लिए तैयार करना है।

रूसी शिक्षाविद सुखोमिलिंस्की की पुस्तक खुशियों का स्कूल आज के दौर में भी प्रासंगिक हो गयी है, जब शिक्षा केवल एक प्रतियोगिता बन कर रह गयी है। यह पुस्तक हमें याद दिलाती है कि बच्चे का दिल और उसकी संवेदनाएं, उसकी बुद्धि से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।

सुखोमिलिंस्की का मानना था कि बच्चों के लिए खुशियों का स्कूल दीवारों के भीतर नहीं बल्कि प्रकृति की गोद में शुरू होता है। उन्होंने नीले आसमान के नीचे पेड़ों की छांव में बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। उनका मानना था कि, जब बच्चा प्रकृति के सौंदर्य को देखता है तो उसके भीतर संवेदनशीलता जागती है, जो उसे एक बेहतर इंसान बनाती है।

इस पुस्तक का मूल मंत्र है मैं अपना हृदय बच्चों को देता हूँ। सुखोलोमिलिंस्की ने सिखाया, कि एक शिक्षक को सबसे पहले एक बच्चा बनना पड़ता है। उन्होंने बच्चों के डर, उनकी झिझक और जिज्ञासाओं को सम्मान दिया। खुशियों का स्कूल वह जगह है जहां बच्चे को गलतियां करने पर दंड नहीं मिलता, बल्कि उसे अपनी गलतियों से सीखने का अवसर दिया जाता है।

जब हम इमोशनल इंटीलिजेंसी की बात करते हैं, तो सुखोलोमिलिंस्की दशकों पहले इसके बारे में लिख चुके थे। उन्होंने जोर दिया कि यदि बच्चे के मन में दया, करुणा और सहानुभूति के भाव नहीं हैं, तो उसकी बौद्धिक क्षमता समाज के लिए घातक हो सकती है। खुशियों के स्कूल में कहानियों, संगीत और कला के माध्यम से बच्चों की आत्मा को सींचा जाता है।

उन्होंने पारंपरिक अंकों की प्रणाली का विरोध किया। उनका मानना था कि ग्रेड्स या अंक बच्चों के बीच ईश्या या हीन भावना पैदा करते हैं। उनका अनुसार मूल्यांकन ऐसा होना चाहिए जो बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाए न कि उसे हतोत्साहित करे।

बच्चा स्कूल आये तो उसके मन में डर नहीं बल्कि उमंग होनी चाहिए। उनका मानना था कि एक दुखी बच्चा कभी कुछ सीख नहीं सकता। स्कूल का माहौल उत्सव जैसा होना चाहिए।

खुशियों का स्कूल

सुखोमिलिंस्की का मानना था कि बच्चों के लिए खुशियों का स्कूल दीवारों के भीतर नहीं बल्कि प्रकृति की गोद में शुरू होता है। उन्होंने नीले आसमान के नीचे पेड़ों की छांव में बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। उनका

मानना था कि, जब बच्चा प्रकृति के सौंदर्य को देखता है तो उसके भीतर संवेदनशीलता जागती है, जो उसे एक बेहतर इंसान बनाती है। इस पुस्तक का मूल मंत्र है मैं अपना हृदय बच्चों को देता हूँ। सुखोलोमिलिंस्की ने

सिखाया, कि एक शिक्षक को सबसे पहले एक बच्चा बनना पड़ता है। उन्होंने बच्चों के डर, उनकी झिझक और जिज्ञासाओं को सम्मान दिया। खुशियों का स्कूल वह जगह है जहां बच्चे को गलतियां करने पर दंड

नहीं मिलता, बल्कि उसे अपनी गलतियों से सीखने का अवसर दिया जाता है।



बच्चे का मानसिक विकास प्रकृति के सानिध्य में ही सबसे अच्छा होता है। पेड़, पौधे, पशु, पक्षी और खुले आसमान के नीचे दी गयी शिक्षा बच्चे की बुद्धि को कुशाग्र और विशाल बनाती है।

उनका एक प्रसिद्ध वाक्य था, कि बच्चे के सोचने की शक्ति उसके स्वास्थ्य से जुड़ी होती है। ताजी हवा, खेलकूद और पौष्टिक आहार को वे गणित या विज्ञान जितना ही महत्वपूर्ण मानते थे।

बच्चों को अपने हाथ से काम करना सिखाना चाहिए। जब बच्चा मिट्टी में काम करता है या कुछ बनाता है, तो वह सृजन का आनंद समझता है। यह उसे आलस्य से दूर रखता है और मेहनतकश लोगों के प्रति सम्मान जगाता है।

बुद्धि को विकसित करने के लिए कल्पना बहुत जरूरी है। परिकथाएं बच्चे के सोच के दायरे को फैलाती हैं और उसमें

असंभव कार्यों तथा मेहनतकश लोगों के प्रति सम्मान जगाती हैं। शिक्षक और माता पिता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सुखोलोमिलिंस्की का मानना था कि घर और स्कूल के विचारों में तालमेल होना अनिवार्य है, वरना बच्चा भ्रमित हो जायेगा।

हर बच्चा अलग-अलग होता है, एक ही तराजू में सबको नहीं तोला जा सकता। शिक्षक को हर बच्चे की विशेष प्रतिभा को पहचानना चाहिए, चाहे वो संगीत हो, पेंटिंग हो, या गणित। बच्चे को हर चीज में सुन्दरता देखना सिखाना चाहिए। एक कविता में, एक पेंटिंग में, या द्रव्य सृजन में, सुन्दरता की समझ बच्चे के नैतिक चरित्र को ऊंचा उठाती है। शिक्षा का अंत स्कूल छोड़ने पर नहीं होता। एक सफल शिक्षक वह होता है जो बच्चे के मन में हमेशा सीखते रहने की प्यास जगा दे। जिज्ञासा ही ज्ञान का असली रूप है।

कॉरपोरेट की चमक या छिपा अंधेरा?

सुरक्षित कार्यस्थल

संध्या अग्रवाल

लेखक साहित्यकार हैं।



जब शहर सो रहा होता है, तब काँच की इमारतों में हजारों युवा अपने भविष्य के लिए जाग रहे होते हैं। इन चमकती रोशनीयों के बीच एक ऐसी दुनिया भी बसती है, जो बाहर से जितनी आकर्षक दिखती है, भीतर से उतनी ही जटिल और कभी-कभी असुरक्षित भी हो सकती है।

आधुनिकता की चमक में नहया कॉरपोरेट जगत आज युवाओं के लिए अवसर, आत्मनिर्भरता और सपनों को साकार करने का माध्यम बन चुका है। विशेष रूप से बीपीओ और केपीओ जैसे क्षेत्रों ने बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराया है। परंतु इस चमकदार दुनिया के पीछे कुछ ऐसे अनदेखे प्रश्न भी हैं, जिन पर गंभीरता से विचार किया जाना आवश्यक है—विशेषकर महिलाओं की सुरक्षा और गरिमा से जुड़े प्रश्न।

हाल के समय में कार्यस्थलों पर शोषण, मानसिक दबाव और असुरक्षा से संबंधित घटनाएँ समय-समय पर सामने आती रही हैं। ये घटनाएँ किसी-एक संस्था तक सीमित नहीं हैं, बल्कि एक व्यापक प्रवृत्ति की ओर संकेत करती हैं, जहाँ कार्यसंस्कृति के कुछ पक्ष अब पुनर्विचार की माँग कर रहे हैं।

विशेष रूप से नाइट शिफ्ट में कार्यरत युवतियों के लिए चुनौतियाँ और अधिक जटिल हो जाती हैं। रात का समय, सीमित निगरानी और लगातार प्रदर्शन का दबाव—ये सभी कारक मिलकर एक ऐसा वातावरण बना सकते हैं, जहाँ असुरक्षा की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे में कार्यस्थल केवल रोजगार का स्थान नहीं, बल्कि विश्वास और सुरक्षा का केंद्र भी होना चाहिए। कॉरपोरेट

संस्कृति में टीम आउटिंग, अनौपचारिक मेल-जोल और 'फ्रेंडली' माहौल को प्रोत्साहित किया जाता है। लेकिन जब यही माहौल अनकहे दबाव या असहजता का कारण बनने लगे, तब यह आवश्यक हो जाता है कि स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित की जाएँ। कई बार युवा, विशेषकर अपने करियर की शुरुआत में, परिस्थितियों को समझने और विरोध करने में संकोच करते हैं—और यही संकोच शोषण की संभावना को जन्म देता है।

डिजिटल युग ने इस चुनौती को और गहरा कर दिया है। व्यक्तिगत जानकारी, तस्वीरों या संवाद का दुरुपयोग, ब्लैकमेलिंग और मानसिक उत्पीड़न जैसे खतरे अब कार्यस्थल की सीमाओं से बाहर निकलकर निजी जीवन तक पहुँचने लगे हैं। यह स्थिति केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि संस्थागत विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है।

ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि संस्थान केवल कार्यकुशलता तक सीमित न रहकर, एक सुरक्षित, सम्मानजनक और संवेदनशील वातावरण सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी भी गंभीरता से निभाएँ। POSH (Prevention of Sexual Harassment) जैसे कानूनों का प्राभावी क्रियाचयन, शिकायत निवारण तंत्र की पारदर्शिता और कर्मचारियों के बीच जागरूकता—ये सभी कदम विश्वास की नींव को मजबूत करते हैं।

परिवार और समाज की भूमिका भी इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। युवाओं के साथ खुला संवाद, उनके अनुभवों को सुनना और उन्हें यह विश्वास दिलाना कि वे किसी भी असहज स्थिति के विरुद्ध आवाज उठा सकते हैं—यह सुरक्षा का पहला कदम है।

अंततः, यह समझना होगा कि कॉरपोरेट सफलता का वास्तविक अर्थ केवल आर्थिक प्रगति नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा की रक्षा भी है। यदि कार्यस्थल सुरक्षित नहीं है, तो विकास अधूरा है। आधुनिकता का वास्तविक मूल्य तभी है, जब वह हर व्यक्ति को भयमुक्त और सम्मानजनक वातावरण प्रदान करे।

दृष्टिकोण

चैतन्य नागर

लेखक साहित्यकार हैं।



दुनिया तो लगातार चलती रहती है। वह चाहे भीतर की दुनिया हो या बाहर की। या तो यह आगे बढ़ती है, या पीछे की ओर। एक जगह स्थिर नहीं रहती। इस निरंतर गतिमान दुनिया में भी हमारे भीतर ऐसा हठी कुंठ है जो बार-बार हमसे मुड़ कर पीछे देखने के लिए कहता है। अतीत की सड़कों पर सैर करने का आग्रह करता है।

पुराने एल्बम देखना, बचपन के दोस्तों के बारे में बातें करना, बचपन में सुने गीत गुनगुनाना—कुल मिला कर अतीत की एक रूमांनी छवि रचना और फिर उसका महिमामंडन करना—यह मन की गहरी आदतों में शामिल है। 'कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन'—यह टीस रह-रह कर मन में उठती रहती है। अतीत में जीना एक तरह का कर्मकांड बन गया है जिसमें सभी देर-सवेरे हिस्सा लेते हैं। इसे जी-जान से निभाते हैं। धार्मिक कृत्यों की तरह। इतना ही नहीं, अतीत को भूल जाने में कई बार लोगों के मन में अपराध बोध भी होता है। अपने किसी प्रिय जन को याद न करना ग्लानि बोध पैदा कर देता है।

ऐसा ही समझ में आता है कि अतीत को सीने पर लाद कर चलने वाले मन के लिए वर्तमान बस एक संकरा-सा गलियारा होता है। अतीत इसमें से होकर गुजरता है, थोड़ा संशोधित होता है और भविष्य का रूप धर लेता है। वर्तमान के गतिधर में मन रुक नहीं पाता। तुरंत व्यर्थ होने लगता है और फिर अतीत की ओर मुड़ता है, या फिर भविष्य की तरफ जो अक्सर वर्तमान के स्पर्श से संशोधित अतीत का ही दूसरा नाम है। अतीत की कमीज पहने हुए उसी पुराने मन

का सृजन है भविष्य।

अतीत का बोझ साधारण नहीं होता। किसी चट्टान को पीठ पर लादे रहने के समान है यह। अल्बेयर कामू के निबंध संकलन 'मिथ ऑफ़ सिसिफस' का मुख्य पात्र एक चट्टान को रोज़ धकेल कर एक पहाड़ी के शिखर तक पहुँचाता है, और शाम होते होते वह चट्टान फिर नीचे आ जाती है। यही उसकी पूरी जिन्दगी की कहानी है। वास्तव में यह चट्टान अतीत की है और हम सभी इसे धकेल रहे हैं और अपनी पीठ पर भी लादे हुए हैं। हमारे देखने, सुनने, चलने-फिरने और यहाँ तक की रोज़मर्रा के हर काम में अतीत अपनी नाक चुसेड़ता रहता है। लगातार वर्तमान को अपनी भाषा में अनूदित और परिभाषित करता है। अपने तरीके से उसकी व्याख्या करता चला जाता है। उसका मकसद ही यह सुनिश्चित करना है कि मन कहीं से भी, एक क्षण के लिए वर्तमान में ठहर न पाए। वर्तमान क्षण की मार उसके लिए घातक और जानलेवा है, इसकी गहरी समझ कहीं उसे है।

साहित्य में अतीत का महिमामंडन अक्सर देखा जाता है। अतीत को एक ऐतिहासिक सच के रूप में दर्ज करना जरूरी है यह समझा जा सकता है, पर अतीत में हुई घटनाओं को रूमानियत का जामा पहना कर, उसका बढ़-चढ़ कर बखान करना एक अलग बात है। काव्य में तो यह एक स्थापित परंपरा का हिस्सा है। कवि इससे प्रेरणा लेता है। यादों को संजोता है और व्यक्तिगत, लुभाने शब्दों में उन्हें सजा कर गर्व महसूस करता है। कभी-कभार वह पुरानी बातों की ओर वापस न लौटने की भी हिदायत देता है। फैंज अपनी माशूका से कहता है कि वह अब उससे 'पहले सी मोहब्बत' न माँगे, क्योंकि कई नई सच्चाइयाँ हैं जिनका सामना अब उसे करना है। अक्सर कवि अतीत के पास वापस

लौटने की असंभव माँग भी करता है। मसलन, डी एक लॉरेंस अपनी कविता पियानों में कहता है—'एक बच्चे की तरह रोता हूँ मैं, अतीत के लिए'। यह बीते हुए कल में मन का का स्थिरीकरण है जो रणगता का रूप भी ले सकता है। पर वर्तमान



में ठहरने के साथ एक बड़ी दिक्कत है कि रचनाकार उसे दर्ज नहीं कर सकता। वर्तमान का तो बस अवलोकन या श्रवण किया जा सकता है। उसमें तो बस चुपचाप ठहरा जा सकता है। जब कवि किसी पुरानी बात, पुराने दुःख या सुख को अपनी रचना में दर्ज करता है, तो वास्तव में वह अपनी पुरानी खरोंचों को ही दर्ज करता है। किसी अनुभव के बासी हार बैर उसके बारे में लिखना असंभव है। शायद इसीलिए जेन बौद्ध

कवियों ने चंद शब्दों के, तीन पंक्तियों के हड़कू को पसंद किया, जिसे तक्षण, अतीत के अनावश्यक हस्तक्षेप के बगैर लिखा जा सकता है। जब यह लिखा जाता है, तब तक अतीत के विचार को स्थगित किया जा सकता है। अतीत इसमें सिर्फ तटस्थ भाषिक ज्ञान के रूप में ही आता है। अतीत के बारे में लिखी बातें कहीं बहुत गहरी और मन को छूने वाली भी हो सकती हैं, पर उनमें ऐसा टटकापन नहीं हो सकता है जो वर्तमान में अवलोकन के समय होता है। फिर वैसे भाव सोच-विचार, विश्लेषण, तुलना और अन्य कई मानसिक और वैचारिक उठापटक के बाद उत्पन्न होता है। भले ही वह स्वतःस्फूर्त दिखे, पर उसमें वह अविचलंबता बिलकुल भी नहीं होती। अक्सर हम इस अविचलंबता के अभाव को देखने से चूक जाते हैं। शब्दों के सौन्दर्य और भावनाओं की इमानदारी में फंस जाते हैं। क्योंकि सौंदर्य और अभिव्यक्ति की इमानदारी तो रचना में होती ही है। इसका तात्पर्य कला को स्मृतियों से मुक्त करने की बकालत करना नहीं, बस यह देखने की जरूरत है कि अभिव्यक्ति में स्मृति की बड़ी भूमिका है और इसलिए उसमें ऐसा टटकापन नहीं जो शायद शब्दों में व्यक्त किया भी नहीं जा सकता। वह भाषा के स्पर्श से दूर खिंटक जाता है। इसलिए स्मृतियों पर कवि या किसी भी रचनाकार की निर्भरता को शायद समझा भी जा सकता है। कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिन्हें स्मृतियों पर निर्भरता का पूरा मामला बड़ा ही बचकाना लगता है। उनके लिए अतीत में झूंकने का अर्थ है आपका वर्तमान खाली-खक पड़ा है, उसमें रोचक कुछ भी नहीं बचा। इसके अलावा भविष्य भी बड़ा धुंधला और परिशानियों से भरा हुआ है। ऐसे में अब अतीत के खंडहरों में

घूमने-टहलने के अलावा अब बचा ही क्या है? यह सिर्फ कौरी भावुकता की वजह से नहीं होता; इसके गहरे कारण हैं चेतना में। इसे नॉस्टैल्जिया कहते हैं—जिसमें पुराने दिनों की मीठी और कड़वी यादें मन पर धावा बोलती हैं, कभी सुकून देती हैं और कभी बेचैन कर देती हैं। सवाल उठता है कि क्या अतीत वर्तमान को अधिक समृद्ध बनाता है या यह बस एक तरह का आत्म-वंचना भर है? कभी कभी तो अतीत की सुख यादें इतनी हावी हो जाती हैं, कि मन जैसे पंगु हो जाता है। दुखद यादों के साथ भी यही होता है। सामने खड़ा वर्तमान दिखाई ही नहीं देता। इस तरह का नॉस्टैल्जिया उदासी और अवसाद का पर्याय बन जाता है। बुढ़ापे में अक्सर लोग इसके शिकार होते हैं। अपने जमाने के डेढ़ रूपये किलो वाले घी या सौ रूपये तोला वाले सोने के भाव को याद करके गहरी उदासी में डूब जाते हैं। साथ ही अतीत की पनाह वर्तमान से पलायन का भी एक आसान जरिया बन जाती है। कई आधुनिक मनोवैज्ञानिक इसे वर्तमान की दुश्मिताओं के लिए एक रक्षा कवच की तरह देखते हैं। इसके कारण चित्तएँ खत्म तो नहीं होतीं, पर उनके खत्म होने का एक धम जबरू पैदा हो जाता है। इस तरह नॉस्टैल्जिया एक मनोवैज्ञानिक सहाय देता है, एक तरह की बैसाखी भी बनता है खास कर तब जब आप बहुत ही कमजोर और बेहसारा महसूस कर रहे हो।

हमारा जटिल मन चित्त की आड़ी-तिरछी रेखाओं पर चलता है। इन रेखाओं को बनाने का काम है विचारों और स्मृतियों का। जीवन सरल और सहज हो इसके लिए जरूरी है कि ये रेखाएँ भी सीधी रहें। मन जहाँ तक संभव हो, वर्तमान में ही टिका रहे। पेंडुलम की तरह अतीत और भविष्य के बीच झूले भी तो उसपर नजर बनी रहे। खास कर बौद्ध धर्म तो इसपर बहुत जोर देता है। कहना तो आसान है, पर करना कठिन। फिर भी कोशिश की जानी चाहिए इसे करने की। मानसिक स्वास्थ्य और शांति के लिए बड़ा जरूरी है यह। यादों को पूरी तरह मिटा देना तो शायद संभव नहीं, बस ऐसा कुछ किया जाए कि वे आये और चली जाएँ। चाय पानी के लिए घर में बैठ न जाएँ। घर के फर्नीचर का हिस्सा न बन जाएँ।

बाबा साहब का जीवन संघर्ष, शिक्षा और आत्मसम्मान की प्रेरणा देता है- केन्द्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर

तीसगांव में आयोजित अंबेडकर सम्मान संगोष्ठी में भाजपा जिलाध्यक्ष व पूर्व कैबिनेट मंत्री हुए शामिल



सुबह सवेरे धार । भारत रत्न डॉ अंबेडकर जयंती पखवाड़ा के तहत बदनावर विधानसभा क्षेत्र के गांव तीसगांव में भाजपा द्वारा डॉ अंबेडकर सम्मान संगोष्ठी शनिवार को आयोजित की गई।संगोष्ठी की मुख्य वक्ता केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर थीं। भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती ने अध्यक्षता की। विशेष अतिथि के रूप में पूर्व कैबिनेट मंत्री राजवर्धनसिंह दत्तोगांव, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा, डॉ भीमराव अंबेडकर संगोष्ठी जिला संयोजक विपिन राठौर व सह संयोजक रमेश चौहान व डॉ बलबहादुर सिंह, भाजपा मंडल

अध्यक्ष आशीष जैन, अनुसूचित जाति मोर्चा प्रदेश पदाधिकारी प्रवीण चावला, अनुसूचित जाति मोर्चा जिलाध्यक्ष पूनमचंद फक्रोरा, भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्रेमचंद परमार, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, भाजपा नेता चतरसिंह बिजुर, रेवसिंह भाबर, रितेश डावर, जितेंद्र मंडलोई, ग्राम पंचायत सरपंच सावित्री डावर, उप सरपंच दशरथ यादव अन्य मंडलो के अध्यक्ष मनीष गुर्जर, गोविंद रघुवंशी, दिल्लीपसिंह सोलंकी आदि मंचासीन थे। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर और राष्ट्रीय %वंदे मातरम% के साथ हुई।

केन्द्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि बाबा साहब ने भारतीय संविधान के निर्माण के माध्यम से देश को एक सशक्त लोकतांत्रिक आधार प्रदान किया। सामाजिक न्याय, समानता और अधिकारों की जो नींव बाबा साहब ने रखी, वही आज भारत की लोकतांत्रिक मजबूती का आधार है। उनका जीवन संघर्ष, शिक्षा और आत्मसम्मान की प्रेरणा देता है। उनके विचार समाज को एकजुट करते और भेदभाव मिटाने का मार्ग दिखाते हैं। बाबा साहब के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाना ही सच्ची श्रद्धांजलि है।

पूर्व कैबिनेट मंत्री राजवर्धनसिंह दत्तोगांव ने कहा कि बाबा साहब भारतीय इतिहास के महान व्यक्तित्व, समाज सुधारक, न्यायविद और संविधान निर्माता थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन सामाजिक समानता, न्याय और मानवाधिकारों की स्थापना के लिए समर्पित कर दिया था, उन्होंने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद शिक्षा को अपना सबसे बड़ा हथियार बनाया। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से उच्च शिक्षा प्राप्त कर देश का नाम रोशन किया।

भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती ने संबोधित करते हुए कहा कि डॉ. अंबेडकर ने जाति प्रथा और अस्पृश्यता के खिलाफ सशक्त आवाज उठाई। उन्होंने दलितों और वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए कई आंदोलन चलाए। वे भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार थे, जिन्होंने सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार, स्वतंत्रता और न्याय सुनिश्चित किया। जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा ने संबोधित करते हुए कहा कि बाबा साहब की जीवन शैली व उनके सिद्धांत पर चलकर जनकल्याण का काम सभी को करना है। बाबा साहब ने सभी को समानता का अधिकार दिया।

कार्यक्रम में विभिन्न स्कूलों के मेधावी छात्र छात्राओं, दिव्यांगजनों व अन्य समाजजनों को भी शील्ट प्रदान कर सम्मानित किया गया। संचालन रमेश चौहान ने किया। बड़ी संख्या में गांववासी मौजूद थे।

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान शिविर में 587 गर्भवती महिलाओं की जांच, 346 हाई रिस्क मिली

बैतूल। गर्भवत्या से संबंधित

जटिलताओं का पता लगाने और समय रहते उनका उपचार सुनिश्चित कर सुरक्षित प्रसव करवाने के लिए प्रतिमाह 9 एवं 25 तारीख को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान का आयोजन किया जाता है मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुस्मा ने बताया कि शनिवार को जिले में आयोजित प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान शिविर में 587 गर्भवती महिलाओं की जांच एवं 346 हाई रिस्क चिन्हित तथा 79 सोनोग्राफी की गई। शिविर में सभी महिलाओं की खून की जांच एवं जीडीएम की जांच की गई। जिला चिकित्सालय बैतूल में आयोजित प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान शिविर में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ वंदना धाकड़ द्वारा 55 गर्भवती महिलाओं की चिकित्सकीय जांच की गई, जिसमें 19 गर्भवती महिलाओं को हाई रिस्क के रूप में चिन्हित किया गया, 79 गर्भवती महिलाओं की सोनोग्राफी की गई।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र घोड़ाडोंगरी में स्त्री रोग चिकित्सक (पीजीएमओ) डॉ कविता कोरी द्वारा 50 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें 46 हाई रिस्क महिलाओं की जांच की गई। सामुदायिक स्वास्थ्य



केन्द्र सेहरा में महिला चिकित्सा अधिकारी डॉ नीलम महजन द्वारा 55 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 14 हाई रिस्क महिलाएं पाई गईं। सिविल अस्पताल आमला में महिला चिकित्सा अधिकारी डॉ इवान जेम्स द्वारा 35 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें हाई रिस्क 16 महिलाएं पाई गईं। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तरुणा काकोडिया द्वारा 121 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें हाई रिस्क 121 महिलाएं पाई गईं। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रभात पट्टन में स्त्री रोग चिकित्सक डॉ सोनाली मरकाम द्वारा 39 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें 20 हाई रिस्क महिलाओं की जांच की गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भीमपुर में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ ईशा डेनियल द्वारा 62 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 26 हाई रिस्क महिलाएं पाई गईं।

महिलाओं की जांच जिसमें, 11 हाई रिस्क महिलाएं पाई गईं। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मुलताई में स्त्री रोग चिकित्सक डॉ सरिता कालभार द्वारा 43 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें 29 हाई रिस्क महिलाएं पाई गईं। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चिचोली में स्त्री रोग चिकित्सक डॉ तरुणा काकोडिया द्वारा 121 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें हाई रिस्क 121 महिलाएं पाई गईं। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रभात पट्टन में स्त्री रोग चिकित्सक डॉ सोनाली मरकाम द्वारा 39 गर्भवती महिलाओं की जांच, जिसमें 20 हाई रिस्क महिलाओं की जांच की गई। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भीमपुर में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ ईशा डेनियल द्वारा 62 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 26 हाई रिस्क महिलाएं पाई गईं।

नाबालिग के अपहरण और दुष्कर्म का मामला आरोपी गिरफ्तार बालिका सकुशल बरामद



मुलताई/बैतूल। नाबालिग बालिका के अपहरण और दुष्कर्म के गंभीर मामले में पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। साथ ही पीड़िता को सुरक्षित बरामद कर परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार, 27 नवंबर 2025 को फरियादी ने थाना मुलताई में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि अज्ञात व्यक्ति उनकी नाबालिग पुत्री को बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया है। शिकायत के आधार पर पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तलाक एक विशेष टीम का गठन किया। टीम ने संभावित ठिकानों पर लगातार दबिश दी और मुखबिर तंत्र के साथ-साथ तकनीकी साधनों का सहारा लेकर बालिका और आरोपी की तलाश जारी रखी।

बालिका सुरक्षित मिली, आरोपी की हुई पहचान... लगातार प्रयासों के बाद 24 अप्रैल 2026 को पुलिस ने नाबालिग बालिका को सकुशल बरामद कर लिया। पूछताछ में बालिका ने बताया कि आरोपी सागर खपरिये (23 वर्ष), निवासी ग्राम लाखापुर, थाना मुलताई उसे बहला-फुसलाकर ले गया और उसके साथ जबदस्ती दुष्कर्म किया। ग्राम लाखापुर से आरोपी गिरफ्तार सूचना के आधार पर पुलिस ने ग्राम लाखापुर में दबिश देकर आरोपी को 24 अप्रैल 2026 को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को विधिवत न्यायालय में पेश किया गया, जहां आगे की कानूनी कार्यवाई जारी है। इन पुलिसकर्मियों की रही अहम भूमिका इस कार्रवाई में थाना प्रभारी निरीक्षक नरेंद्र सिंह परिहार, उपनिरीक्षक सुनील सरेयाम, उपनिरीक्षक मोनिका पटले, आरक्षक मेधा धुर्वे, प्रिंस, अरविन्द एवं सैनिक ज्वालासिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बहनों का यह आक्रोश समाज में लाएगा जागृति : हेमंत खंडेलवाल

महिला आक्रोश सम्मेलन सहित जन आक्रोश पदयात्रा संपन्न

बैतूल। जिला भाजपा कार्यलय विजय भवन में महिला जन आक्रोश को लेकर महिला जन आक्रोश सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन को संबोधित करते भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि हमारे समाज की शक्ति बहने है जिस समाज और राष्ट्र में महिलाओं को अधिकार से वंचित किया वे समाज और राष्ट्र समाप्त हो गए। हम शुरुआत से ही महिला सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रहे हैं। लोकसभा में जिस तरह विपक्ष ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम की खिलाफत की है उसके खिलाफ महिलाएं आक्रोशित हैं। महिलाओं का यह आक्रोश हर गली और गांव सहित देश में जाग्रित का काम करेगा। सम्मेलन को संबोधित करते हुए केन्द्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उड्डे ने कहा कि व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व की शक्ति नारी शक्ति है। परिवारवादी राजनीतिक दलों ने महिलाओं को उनके अधिकार से वंचित करने का काम किया है। ऐसे राजनीतिक दल सिर्फ अपने परिवार को महिलाओं के लिए प्रतिबद्ध है। इन राजनीतिक दलों के लिए सत्ता भोग का विषय है भाजपा के लिए राष्ट्रसेवा का संबन्ध हम इस तरह समझ सकते हैं कि हमने राष्ट्र को माता की तरह प्रेम किया है। वहीं कांग्रेस के लिए प्रियंका और सोनिया और अखिलेश के लिए उनकी पत्नी डिम्पल यादव ही सर्वेसर्वा हैं। हम सबकी भागीदारी नीति निर्धारण में चाहते हैं। सम्मेलन को संबोधित करते जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार

महिला आक्रोश सम्मेलन सहित जन आक्रोश पदयात्रा संपन्न

महिला आक्रोश सम्मेलन सहित जन आक्रोश पदयात्रा संपन्न



ने कहा कि इंडी गठबंधन ने देश की आधी आबादी की आकांक्षाओं का गला लोकसभा सत्र में घोंटा है। महिलाएं इस अपमान को कभी माफ नहीं करेंगीं। जिन लोगों ने महिलाओं के अधिकारों के साथ लोकसभा में वंचित किया उन राजनीतिक दलों को भविष्य में महिलाएं सबक सिखाएंगीं। सम्मेलन को संबोधित करते हुए पूर्व राष्ट्रीय सचिव पूर्ण सांसद ज्योति धुर्वे ने कहा कि आजादी के बाद पहली बार भाजपा ने कहीं महिला आक्रोश की बात कहीं देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाओं को उनका हक दिलाने का प्रयास किया। लेकिन कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने महिलाओं को उनके हक से वंचित किया। अपने हक के लिए हम हर कदम उठाएंगे और अपने हक को लेकर लड़ेंगे। सम्मेलन को संबोधित करते हुए घोड़ाडोंगरी विधायक गंगा उड्डे ने कहा कि जब कोई कार्य करने की हमारी मंशा हो और लोग उस कार्य को बिगाड़े तो हमें गुस्सा आता है। कांग्रेस ने जानबूझकर महिलाओं

जगरूकता रथ को हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

बैतूल। विश्व मलेरिया दिवस पर मुख्य

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुस्माडे द्वारा शनिवार को सीएमएचओ कार्यालय से हरी झण्डी देकर मलेरिया रथ को रवाना किया गया। सीएमएचओ डॉ हुस्माडे ने बताया कि मलेरिया एक संक्रामक रोग है, जो संक्रमित मादा एनाफिलीज मच्छर के काटने से होता है। मलेरिया 5 प्रकार का होता है। बैतूल जिले में प्रमुखतः 2 प्रकार का मलेरिया पाया जाता है, पहला है प्लाजमोडियम वाइवैक्स मलेरिया और दूसरा प्लाजमोडियम फेल्ट्सीपेरम मलेरिया। मलेरिया के सामान्य लक्षण हैं, तेज बुखार, सर दर्द, उंड लगना, कंपकंपी आना, पसीना आना, अत्यंत गंभीर स्थिति में उल्टी होना, डायरिया तथा मरीज कोमा में भी जा सकता है और मृत्यु भी हो सकती है। अतः मरीज को गंभीर स्थिति में जाने से बचाने के लिए अक्सर खून की जांच तथा मलेरिया पाए जाने पर तुरंत उपचार देना आवश्यक है। उपचार से तारपत्र पूर्ण उपचार से है, वाइवैक्स मलेरिया में 14 दिनों तक उपचार दिया जाता है एवं फेल्ट्सीपेरम मलेरिया में 3 दिनों तक उपचार दिया जाता है। यदि संक्रमित व्यक्ति को मादा एनाफिलीज मच्छर काट ले और यह मच्छर किसी स्वस्थ व्यक्ति को काटे तो मलेरिया फैल सकता है। मच्छर के काटने से लक्षण प्रकट होने के बीच के समय को इनक्यूबेशन पीरियड कहते हैं तथा यह 9 से 14 दिनों तक का होता है। मलेरिया से लीवर, लाल रक्त कोशिकाएं तथा गंभीर स्थिति में किडनी एवं दिमाग भी प्रभावित होते हैं। इस अवसर पर जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ प्रॉजल उपाध्याय, जिला मलेरिया अधिकारी जितेंद्र सिंह राजपूत, डीपीएम डॉ विनोद शास्त्र, सीएमएचओ कार्यालय स्टाफ, मलेरिया कार्यालय का स्टाफ, बैतूल शहरी स्टाफ आशा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

हूए भैंसदेही विधायक महेन्द्रसिंह चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ऐतिहासिक निर्णय लिए गए हैं धारा 370 हटाना हो या तीन तलाक का मुद्दा हर जगह निर्णयों की शक्ति देखी जा सकती है। मोदी जी ने देश की महिलाओं को नीति निर्धारण में शामिल करने के लिए प्रयास किया तो कांग्रेस के सहयोगियों ने महिलाओं के खिलाफत में जाकर वोट किया जो महिलाएं हमेशा याद रखेंगी। सम्मेलन को संबोधित करते हुए जिला महामंत्री कमलेश सिंह ने कहा कि 70 साल बाद देश के प्रधानमंत्री धार्मिक सामाजिक कार्यों की शुरुवात में हम कन्या पूजन करते हैं। इसी प्रकार का महत्व राजनीति में भी मिलना चाहिए। लेकिन कांग्रेसी और उसके सहयोगी महिलाओं को सम्मान की नजर से नहीं देखते मोदी जी के नेतृत्व में शौचालय निर्माण , तीन तलाक और हर घर नल से जल जैसी योजनाएं महिलाओं के मान और सम्मान के रक्षा करने वाली हैं। सम्मेलन को संबोधित करते हुए आमला विधायक डा.योगेश पंडा ने कहा कि भाजपा ने शुरुआत से ही महिलाओं के सशक्तिकरण का कार्य किया है। लाडली लक्ष्मी योजना हो या लाडली बहना योजना, पंचायत व निजाम चुनाव में 50 प्रतिशत आरक्षण भाजपा के रीति नीति का परिणाम है। लेकिन कांग्रेस ,टीएमसी और डीएमके ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम के विधेयक को गिराने का काम किया है। इन्हे महिलाओं का श्राप लगेगा। सम्मेलन को संबोधित करते

बीजादेही छात्रावास व स्वास्थ्य केंद्र का कलेक्टर ने किया निरीक्षण, छात्रों के साथ खेला वॉलीबॉल

बैतूल। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने गत दिवस शाहपुर भ्रमण के दौरान ग्राम बीजादेही स्थित राजा शंकर शाह-रघुनाथ शाह सोनियार बालक छात्रावास का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का बारीकी से अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने छात्रावास में रह रहे छात्रों से संवाद कर नारते व भोजन की उपलब्धता, समयबद्धता, उनके गृहग्राम तथा अधीक्षक के व्यवहार के संबंध में जानकारी ली। कलेक्टर डॉ सोनवणे ने छात्रावास में स्मार्ट क्लास, कंप्यूटर लैब और

पुस्तकालय का निरीक्षण किया। स्मार्ट क्लास का नियमित संचालन नहीं पाए जाने पर उन्होंने नाराजगी जताते हुए कहा कि वर्तमान समय में ई-कंटेंट के माध्यम से अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, इसलिए स्मार्ट क्लास का नियमित संचालन सुनिश्चित किया जाए। कंप्यूटर कक्ष के निरीक्षण के दौरान उन्होंने विद्यार्थियों के कंप्यूटर ज्ञान का भी परीक्षण किया। पुस्तकालय निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने निर्देश दिए कि अनिवार्य पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए तथा पुस्तकों को

सुव्यवस्थित ढंग से रखा जाए, ताकि छात्र आसानी से विषयवार पुस्तकों का चयन कर सकें। उन्होंने बीईओ को निर्देशित किया कि सभी छात्रावासों में कंप्यूटर लैब एवं पुस्तकालय पूर्ण रूप से क्रियाशील रहें। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने भोजनशाला का भी जायजा लिया और कर्मचारियों से भोजन निर्माण व वितरण के समय की जानकारी ली। उन्होंने निर्देश दिए कि निर्धारित मेन्यू के अनुसार ही गुणवत्तापूर्ण भोजन तैयार कर छात्रों को समय पर उपलब्ध कराया जाए।

जनगणना कार्य के लिए जिले के 3179 प्रशिक्षणार्थी हुए दक्ष

प्रणकों एवं पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण संपन्न, 1 मई से 30 मई तक होगा सर्वे

बैतूल। जिले में जनगणना 2027 के प्रथम चरण अंतर्गत मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना को प्रभावी, सटीक एवं समयबद्ध रूप से संपन्न कराने के उद्देश्य से प्रणकों एवं पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण अभियान सुदृढ़ रूप से संचालित किया गया। कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के नेतृत्व तथा अपर कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी श्रीमती वंदना जाट के मार्गदर्शन में नगरीय एवं ग्रामीण चार्ज मुख्यालयों पर आयोजित यह प्रशिक्षण फील्ड स्तर पर कार्यकुशलता एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। जिला योजना अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला जनगणना अधिकारी नरेंद्र कुमार गौतम ने बताया कि जनगणना 2027 के शुभकर प्रगति और विकास है। महिला प्रणक प्रगति तथा पुरुष प्रणक विकास को दर्शाते हैं। प्रशिक्षण लेने वाले प्रणक एवं पर्यवेक्षक प्रगति और विकास की भूमिका निभाते हुये विकसित भारत -2047 के लिये नीतियों के निर्माण का आधारभूत डाटाबेस तैयार करने की अहम कड़ी है, जो जनगणना का कार्य करेंगे। जनगणना कार्य हेतु प्रणक एवं पर्यवेक्षक 1 मई से 30 मई तक घर-घर जाकर निश्चित 33 सवालों के जवाब संकलित करने का कार्य करेंगे।

तीन चरणों में प्रशिक्षण का आयोजन- उन्होंने बताया कि जिले में प्रणकों एवं पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण तीन चरणों में सुव्यवस्थित रूप से आयोजित किया गया। प्रथम चरण 15 से 17 अप्रैल 2026 में 9 ग्रामीण चार्जों के अंतर्गत कुल 857 प्रशिक्षार्थी, जिनमें 733 प्रणक एवं 124 पर्यवेक्षक शामिल रहे। द्वितीय चरण 19 से 21 अप्रैल 2026 में 10 ग्रामीण चार्जों के 731 प्रणक एवं 124 पर्यवेक्षक तथा 4 नगरीय चार्जों के 206 प्रणक एवं 25 पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। तृतीय चरण 23 से 25 अप्रैल 2026 में 10 ग्रामीण चार्जों के 746 प्रणक एवं

आदि गुरु शंकराचार्य जयंती पर व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित

आदि गुरु सनातन धर्म के सूत्रवाहक एवं अद्वैतवाद के ध्वजवाहक हैं

बैतूल। मंत्र जन अभियान परिषद, जिला बैतूल द्वारा शासकीय जयवंती हक्सर स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आदि गुरु शंकराचार्य जी की जयंती के अवसर पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में गाथरी परिवार से गोसेवक उत्तम गायकवाड़, वरिष्ठ समाजसेवी योगी खंडेलवाल, संभाग समन्वयक कोशलेश प्रतिपति तिवारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा आदि गुरु शंकराचार्य के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी ने अतिथियों का स्वागत एवं परिचय कराते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि आदि गुरु शंकराचार्य जयंती के उपलक्ष्य में उनके राष्ट्रनिर्माण में योगदान, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से समाज को अलगत कराने हेतु जिले में 22 से 30 अप्रैल 2026 तक 51 स्थानों पर जिला स्तरीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया जा रहा है। वरिष्ठ समाजसेवी योगी

आदि गुरु शंकराचार्य जयंती पर व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित



खंडेलवाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि आदि शंकराचार्य अद्वैतवाद के ध्वजवाहक हैं और उनका अखंड विश्वास मानव एकता एवं भाईचारे पर आधारित था। वे भारतीय दर्शन के महान तत्वज्ञानी थे तथा वर्तमान सनातन धर्म उनके द्वारा प्रतिपादित स्वरूप से आलोकित है। मुख्य अतिथि उत्तम गायकवाड़ ने कहा कि आदि गुरु शंकराचार्य ने संपूर्ण भारत में भ्रमण कर वैदिक सनातन धर्म को पुनर्संस्थापना की। वे सनातन धर्म के पुनरुद्धारक, चारों वेदों पर आधारित शैक्षिक व्यवस्था के प्रणेता एवं सर्व शास्त्रार्थ विजता थे। संभाग समन्वयक

कोशलेश प्रतिपति तिवारी ने बताया कि शंकराचार्य ने भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया तथा चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना कर समाज में एकता स्थापित की। कार्यक्रम में शंकराचार्य के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि उन्होंने अल्पायु में ही गृह त्याग कर समाज को एकजुट करने का कार्य किया। वर्तमान समय में भी समाज को जाति एवं वर्ग भेद मिटाकर राष्ट्र सर्वोपरि की भावना से कार्य करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का संचालन परामर्शदाता सुनील शंकर पंवार द्वारा किया गया तथा आभार प्रदर्शन परामर्शदाता राजू आठनरे ने किया। उन्होंने सभी सहभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए राष्ट्र स्तर पर कार्य करना अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम में जन अभियान परिषद की प्रसफुटन समिति, नवांकर समिति, मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के छात्र-छात्राओं एवं परामर्शदाताओं ने सक्रिय सहभागिता की।

सूरज के 'प्रेम' की 12 साल बाद वापसी

फैमिली एंटरटेनमेंट सिनेमा के लिए पहचाने जाने वाले मशहूर फिल्ममेकर सूरज बड़जात्या एक बार फिर अपने क्लासिक अंदाज़ में दर्शकों के बीच लौटने की तैयारी में हैं। 'मैंने प्यार किया' जैसी आइकॉनिक फिल्म बनाने वाले सूरज बड़जात्या अब अपनी नई फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया' लेकर आ रहे हैं, जिसका आधिकारिक ऐलान हो चुका है। यह फिल्म एक म्यूजिकल फैमिली एंटरटेनमेंट होगी, जिसमें रिश्तों की गर्माहट, भावनाओं की गहराई और संगीत का खूबसूरत मेल देखने को मिलेगा।



नई फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया' में पहली बार आयुष्मान खुराना और शरवी वार्ध का जोड़ी बड़े पर्दे पर नजर आएगी। दोनों कलाकार अपने-अपने अलग अंदाज़ और अभिनय क्षमता के लिए जाने जाते हैं, और यही वजह है कि इस नई जोड़ी को लेकर दर्शकों में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। फिल्म 27 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी, जिससे यह साल के अंत में फैमिली ऑडियंस के लिए एक बड़ा आकर्षण बन सकती है। फिल्म का निर्माण राजश्री प्रोडक्शन और महावीर जैन फिल्मस मिलकर कर रहे हैं। राजश्री प्रोडक्शन लंबे समय से पारिवारिक फिल्मों के लिए जाना जाता रहा है, जिसने 'हम आपके हैं कौन' और 'विवाह' जैसी फिल्मों के जरिए दर्शकों के दिलों में खास जगह बनाई है। ऐसे में 'ये प्रेम मोल लिया' से भी उसी तरह की सादगी और भावनात्मक जुड़ाव की उम्मीद की जा रही है। इस फिल्म की सबसे खास बात है राजश्री फिल्मों का लोकप्रिय किरदार 'प्रेम', जिसकी करीब 12 साल बाद बड़े पर्दे पर वापसी हो रही है। इससे पहले यह किरदार सलमान खान जैसे स्टारस निभा चुके हैं और इसे दर्शकों ने खूब पसंद किया था। अब पहली बार इस

किरदार को आयुष्मान खुराना निभाते नजर आएंगे। आयुष्मान अपनी अलग तरह की फिल्मों और सामाजिक विषयों पर आधारित किरदारों के लिए जाने जाते हैं, इसलिए उनका 'प्रेम' का किरदार निभाना एक दिलचस्प बदलाव माना जा रहा है। वहीं, शरवी वार्ध का किरदार पारंपरिक राजश्री हीरोइन की छवि



को दर्शाएगा—जिसमें सादगी, संस्कार और भावनात्मक मजबूती का मेल होगा। फिल्म में उनके किरदार को इस तरह गढ़ा गया है कि वह आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाती नजर आएंगी। दोनों कलाकारों की ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री फिल्म का बड़ा

आकर्षण हो सकती है। संगीत की बात करें तो फिल्म का म्यूजिक हिमेश रेशमिया तैयार कर रहे हैं, जो लंबे समय बाद सूरज बड़जात्या के साथ काम कर रहे हैं। इससे पहले दोनों ने 'प्रेम रतन धन पायो' में साथ काम किया था, जिसका संगीत काफी लोकप्रिय हुआ था। ऐसे में 'ये प्रेम मोल लिया' के गानों से भी दर्शकों को काफी उम्मीदें हैं। फिल्म में पारंपरिक मेलोडी और आधुनिक संगीत का मिश्रण देखने को मिल सकता है। सूरज बड़जात्या हाल ही में अपनी फिल्म 'ऊंचाई' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके हैं, जिससे उनकी निर्देशन क्षमता को एक बार फिर सराहा गया। 'ऊंचाई' के बाद यह उनकी आरंभिक बड़ी परियोजना है, और वह फिर से अपने मूल जॉनर फैमिली ड्रामा की ओर लौट रहे हैं। यह वही जॉनर है जिसने उन्हें भारतीय सिनेमा में एक अलग पहचान दिलाई।

फिल्म इंडस्ट्री के जानकारों का मानना है कि 'ये प्रेम मोल लिया' ऐसे समय में आ रही है जब दर्शक फिर से साफ-सुथरी पारिवारिक फिल्मों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। हाल के वर्षों में एक्शन और थ्रिलर फिल्मों के बीच फैमिली एंटरटेनमेंट की कमी महसूस की जा रही थी, जिसे यह फिल्म पूरा कर सकती है। कुल मिलाकर, 'ये प्रेम मोल लिया' सिर्फ एक फिल्म नहीं बल्कि एक भावनात्मक अनुभव होने

का दावा कर रही है जिसे रिश्तों की अहमियत, प्यार की सादगी और परिवार की ताकत को बड़े पर्दे पर खूबसूरती से दिखाया जाएगा। अब देखना दिलचस्प होगा कि आयुष्मान खुराना का 'प्रेम' दर्शकों के दिलों में वही जगह बना पाता है या नहीं, जो पहले इस किरदार ने बनाई थी।

'राजा शिवाजी' का आगाज़, फीस से बढ़ा उत्साह

ऐतिहासिक फिल्मों के शौकीनों के लिए अच्छी खबर है कि 'राजा शिवाजी' 1 मई को सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए तैयार है। यह फिल्म न सिर्फ अपनी कहानी बल्कि अपनी दमदार स्टारकास्ट और बड़े बजट के चलते पहले से ही चर्चा में बन गई। खास बात यह है कि फिल्म में लीड रोल निभाने के साथ-साथ निर्देशन की जिम्मेदारी भी रिदेश देशमुख ने संभाली है। फिल्म में रिदेश देशमुख महान मराठा योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज के किरदार में नजर आएंगे। इस रोल के लिए उन्होंने खुद को पूरी तरह से तैयार किया है। इसके लिए उन्हें लगभग 15 से 18 करोड़ रुपये की फीस मिली है। रिदेश के साथ उनकी पत्नी जेनेलिया डिसूजा भी फिल्म में अहम भूमिका निभा रही हैं। वह



सईबाई भोसले के किरदार में नजर आएंगी। इस भूमिका के लिए जेनेलिया को करीब 1 से 2 करोड़ रुपये की फीस दी गई है। फिल्म की स्टारकास्ट को और मजबूत बनाते हैं अभिषेक बच्चन, जो संभाजी शाहजी भोसले के किरदार में दिखाई देंगे। फिल्म में खलनायक की भूमिका

निभा रहे संजय दत्त अफजल खान के किरदार में नजर आएंगे। ट्रेलर रिलीज के बाद से ही उनके लुक और अभिनय की काफी तारीफ हो रही है।

इसके अलावा, महेश मांजरेकर फिल्म में लखुजी जाधव का किरदार निभा रहे हैं। 'राजा शिवाजी' को एक भव्य ऐतिहासिक एक्शन ड्रामा के रूप में तैयार किया गया है, जिसमें युद्ध, राजनीति और भावनाओं का संतुलन देखने को मिलेगा। फिल्म का उद्देश्य न केवल शिवाजी महाराज के साहस और रणनीति को दिखाना है, बल्कि

उनकी मानवीय संवेदनाओं और नेतृत्व क्षमता को भी बड़े पर्दे पर जीवंत करना है। बड़े सितावर, भारी बजट और मजबूत कहानी के साथ 'राजा शिवाजी' से बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन की उम्मीद की जा रही है।

रियल बॉक्स

बॉक्स ऑफिस पर ढेर, दिग्गजों के सपने

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सुबहे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।



हिंदी सिनेमा के सौ से भी ज्यादा सालों के शानदार सफर में हम अक्सर उन ऊंचाइयों की चर्चा करते हैं जिन्हें 'शोले', 'मुगल-ए-आजम' या 'दंगल' जैसी फिल्मों ने छुआ। बॉक्स ऑफिस के जादुई आंकड़े, करोड़ों का कारोबार और सिल्वर जुबलों के जश्न फिल्मों गलियारों की रोशनी बढ़ाते हैं। लेकिन इस चक्रवर्ति के पीछे एक स्याह और खामोश कोना और भी है, जहाँ उन फिल्मों का ढेर लगा है जिन्हें दर्शकों ने सिरे से नकार दिया। किसी भी कला के इतिहास में असफलता उतनी ही महत्वपूर्ण और कड़वी होती है जितनी सफलता मीठी, क्योंकि हर फ्लॉप फिल्म फिल्मकारों के लिए एक सबक और दर्शकों के बदलते मिजाज का आईना छोड़कर जाती है। आज हम फिल्म इतिहास के उसी 'विफल' अध्याय को पलटेंगे और समझेंगे कि आखिर वे कौन सी महत्वाकांक्षी फिल्मों थीं जो भारी-भरकम बजट, चमकते सितावर और दिग्गज निर्देशकों के बावजूद दर्शकों के दिल के दरवाजे तक पहुँचने में बुरी तरह नाकाम रहीं।

भारतीय सिनेमा में असफलता की पहली सबसे बड़ी और ऐतिहासिक गूँज तब सुनाई दी, जब 'शोर्मेन' राज कपूर ने अपना सब कुछ दांव पर लगाकर 'मेरा नाम जोकर' बनाई थी। आज भले ही हम इसे एक 'कल्ट क्लासिक' मानते हैं और इसकी दार्शनिकता की मिसाल देते हैं, लेकिन 1970 में जब यह रिलीज हुई, तो इसे भारतीय सिनेमा की सबसे बड़ी व्यापारिक आपदाओं में गिना गया। दर्शकों ने इसके भारी-भरकम साठे चार घंटे के रनटाइम और फिल्म की अत्यधिक दार्शनिक गंभीरता को स्वीकार नहीं किया। फिल्म का कथानक एक सर्कस के जोकर के जीवन के तीन पड़वों और उसकी असफल प्रेम कहानियों के इर्द-गिर्द घूमता था। उस दौर का दर्शक जो परदे पर चटख मोनोजन और रफ्तार देखने का आदी था, उसे एक जोकर का लंबा दुःख और उसकी लंबी दास्तान बहुत उबाऊ लगी। फिल्म की लंबाई और दो इंटरवल ने दर्शकों के धैर्य की ऐसी परीक्षा ली कि राज कपूर जैसा दिग्गज निर्माता कर्ज के दलदल में डूब गया। यह फिल्म इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि कभी-कभी एक बेहतरीन कलाकृति भी अपने समय से बहुत आगे होने के कारण 'सुपर फ्लॉप' की श्रेणी में खड़ी कर दी जाती है।

अस्सी और नब्बे के दशक के संघर्षकाल में जब अमिताभ बच्चन का जादू अपने चरम पर था, तब कुछ ऐसी फिल्में आईं जिन्होंने साबित किया कि केवल सुपरस्टार का नाम फिल्म को वैतरणी पर नहीं लगा सकता। 'जादूगर' और 'तूफान' जैसी फिल्में इसका जीवंत उदाहरण हैं। उस दौर में दर्शकों का स्वाद बदल रहा था और वे यथार्थवाद की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन फिल्मकार अब भी वही पुराने अलौकिक और चिसे-पिटे फार्मुले दोहरा रहे थे। 'जादूगर' में अमिताभ बच्चन को एक ऐसे किरदार में पेश किया गया जो जादुई शक्तियों से बुराई का अंत करता है, लेकिन फिल्म की कहानी इतनी बचकानी और तर्कहीन थी कि इसे बच्चों ने भी पसंद नहीं किया। फिल्म में फैंटेसी और हकीकत का बेमेल घालमेल दर्शकों को रास नहीं आया। वही एंगी यंग मैन की छवि को जादू की छड़ी के साथ देखा दर्शकों के लिए एक दुःख अनुभव साबित हुआ। इसी तरह यश चोपड़ा जैसे मंझे हुए निर्देशकों की 'परंपरा' भी एक ऐसी ही फिल्म थी, जिसने सारंगती परंपराओं और खानदानों की संस्था की उस पुरानी सड़ने-गली कहानी को पेश किया जिसे दर्शक दशक भर पहले ही छोड़ चुके थे।

जैसे-जैसे सिनेमा आधुनिक हुआ, प्रयोगों का जोखिम भी बढ़ा। साल 2007 में संजय लीला भंसाली की 'सांवरिया' एक ऐसी फिल्म बनकर आई जिसे लेकर इंडस्ट्री में जबर्दस्त उत्साह था। रणबीर कपूर और सोम कपूर का डेब्यू और भंसाली की भव्यता का मेल। लेकिन फिल्म की

नीली और काली रोशनी वाली कृत्रिम बैकग्राउंड सेटिंग और एक ऐसी कहानी जिसमें नायक और नायिका के बीच का ड्रड बहुत ही कमजोर था, दर्शकों को समझ ही नहीं आई। फिल्म का कथानक बहुत ही संक्षिप्त था जिसे खींचकर लंबा किया गया था। लोगों को लगा कि वे फिल्म नहीं बल्कि एक सजी-धजी 'पेंटिंग' देख रहे हैं जिसमें भावनाओं की गर्माहट गायब है। इसके मुकाबले उसी दिन रिलीज हुई 'ओम शांति ओम' की मसाला कहानी ने बाजी मार ली। 'सांवरिया' की असफलता ने स्पष्ट किया कि फिल्म निर्माण में तकनीक और भव्यता तभी काम आती है जब उनके पीछे एक ठोस और जुड़ाव पैदा करने वाली कहानी खड़ी हो।

सुपर फ्लॉप फिल्मों के जिक्र में सुभाष चंद्र की 'यादें' का नाम लेना भी अनिवार्य है। एक समय था जब सुभाष चंद्र का नाम ही हिट की गारंटी होता था। लेकिन 'यादें' के साथ उन्होंने एक ऐसी कहानी चुनी जो पारिवारिक रिश्तों के उलझे हुए ताने-बाने को पुलझाने के बजाय और उलझा गई। फिल्म में ऋतिक रोशन और करीना

डिजास्टर फिल्में रही। इनमें सरफिरा, खेल खेल में, स्काई फॉर्स, बड़े मियां छोटे मियां, रक्षा बंधन, सम्राट पृथ्वीराज, सेल्फी, बच्चन पांडे और 'राम सेतु' शामिल हैं। इनके अलावा, 'सौगंध' (1991), 'जोकर', चांदनी चौक टू चाइना, कमबख्त इश्क, तीस मार खां, लक्ष्मी (ओटीपी पर), 'बेल बॉटम' और 'बॉस' भी बॉक्स ऑफिस पर असफल रहीं।

एक दौर ऐसा भी आया जब रोमक बनाने की होड़ मची। साजिद खान की 'हिम्मतवाला' ने यह भ्रम पाल लिया था कि अस्सी के दशक की तर्कहीन कॉमेडी और लाउड एक्शन आज के दौर में भी चल जाएगा। लेकिन 2013 का दर्शक बदल चुका था। फिल्म का कथानक इतना शोर-शराबे वाला और सिरदर्द पैदा करने वाला था कि दर्शकों ने इसे पहले ही दिन नकार दिया। यह फिल्म इस बात की गवाह बनी कि गुजरने जाने के फार्मुले अगर बिना किसी बदलाव के पेश किए जाएं, तो वे डिजास्टर ही साबित होते हैं। इसी कड़ी में आमिर खान और अमिताभ बच्चन की 'ठस ऑफ हिंदोस्तान' का नाम भी आता है। दो दिग्गजों को एक साथ देखना दर्शकों का



कपूर जैसे युवा सुपरस्टार्स होने के बावजूद, पटकथा इतनी खिखरी हुई थी कि दर्शक मुख्य किरदारों के जज्बातों से जुड़ ही नहीं पाए। फिल्म के गानों ने तो लोकप्रियता बढ़ाई, लेकिन स्क्रीनपले में गहराई की कमी और अत्यधिक विज्ञापनों के प्रदर्शन ने दर्शकों के अनुभव को खराब कर दिया। यह फिल्म इस बात का उदाहरण बनी कि केवल विदेशी लोकेशंस और बड़े चेहरे फिल्म को नहीं बचा सकते यदि पटकथा की नींव कमजोर हो।

भारतीय सिनेमा के इतिहास में कुछ ऐसी फिल्में भी रहीं जो 'दुस्साहस' का परिणाम थीं। इसमें 'राम गोपाल वर्मा की आग' का नाम सबसे ऊपर आता है। निर्देशक ने कल्ट क्लासिक फिल्म 'शोले' को दोबारा बनाने की कोशिश की, जिसे दर्शकों ने एक अपराध की तरह लिया। गब्बर सिंह जैसे प्रतिष्ठित किरदार को बब्बर सिंह बनाकर और अजीबो-गरीब कैमरा एंगल्स व शोर-शराबे वाले संगीत के साथ पेश करना दर्शकों को कर्दाई मंजूर नहीं हुआ। मूल फिल्म की आत्मा को चोट पहुँचाना और पाठों के साथ अनानुषंगक छेड़छाड़ करना इस फिल्म की सबसे बड़ी हार बनी। दर्शकों ने इसे भारतीय सिनेमा का सबसे बुरा अनुभव करार दिया।

अभिषेक बच्चन की 'द्रोणा' ने फैंटेसी और सुपरहीरो शैली में हाथ आजमाया। फिल्म पर करोड़ों रुपए पानी की तरह बहाए। लेकिन, इसकी कहानी और विलेन का चित्रण इतना कमजोर था कि सिनेमाघरों में दर्शक अपनी हंसी नहीं रोक पाए। हॉलीवुड की तकनीक श्रेष्ठता देख चुके दर्शकों के लिए 'द्रोणा' का बचकाना कथानक एक मजाक बनकर रह गया। फ्लॉप फिल्मों की लिस्ट में अनिल कपूर और श्रीदेवी की सबसे बड़ी फ्लॉप फिल्म 1993 में आई 'रूप की रानी चोरों का राजा' प्रमुख है। इसके अलावा 'मिस्टर बेचावा' (1996), 'हीर रांझा' (1992) और फ्रिटक्स द्वारा ससई गई 'लम्हे' (1991) भी बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रही थीं। 'हीर रांझा' (1992) फिल्म को भी बॉक्स ऑफिस पर निराशाजनक परिणाम मिले थे। 'मिस्टर बेचावा' (1996) में अनिल कपूर और श्रीदेवी के साथ नागार्जुन भी थे। अश्वय कुमार के करियर में कई बड़ी फ्लॉप और

सपना था, लेकिन फिल्म की कहानी 'पाइरेट्स ऑफ कैरेबियन' की एक सस्ती और कमजोर नकल निकली। दर्शकों को लगा कि उन्हें ठगा गया है, क्योंकि फिल्म में न तो किरदारों की गहराई थी और न ही कोई मौलिकता।

इतिहास गवाह है कि जब-जब फिल्मकारों ने दर्शकों की बुद्धि को कमतर आंका है, बॉक्स ऑफिस पर 'कलंक' जैसी फिल्में पैदा हुई हैं। 'कलंक' अपनी भव्यता, भारी-भरकम सेट्स और सितावरों की फौज के बावजूद एक ऐसी सुस्त फिल्म कहानी थी जिसे दर्शक पहले ही कई रूपों में देख चुके थे। फिल्म की गति इतनी धीमी थी कि ढाई घंटे का समय काठना दर्शकों के लिए सजा बन गया। भव्यता जब कहानी पर हावी हो जाती है, तो परिणाम हमेशा शून्य ही निकलता है। इन सभी फ्लॉप और सुपर फ्लॉप फिल्मों का यदि हम गहराई से विश्लेषण करें, तो एक ही निष्कर्ष निकलता है कि दर्शक कभी भी तकनीक, बजट या बड़े नाम से लंबे समय तक धोखा नहीं खाता। वह पर्दे पर एक ऐसी कहानी ढूँढता है जो उसके चोट पहुँचाना और पाठों के साथ उसकी तर्कशक्ति से मेल खाती हो।

चाहे वह 'मेरा नाम जोकर' की अत्यधिक भावुकता हो, 'सांवरिया' की कृत्रिम दुनिया हो या 'आग' जैसा असफल प्रयोग, इन सभी फिल्मों ने फिल्म जगत को कड़वे लेकिन जरूरी सबक दिए हैं। फ्लॉप फिल्में हमें बताती हैं कि फिल्म निर्माण केवल एक व्यापारिक गणित नहीं है, बल्कि यह दर्शकों की नब्ज पहचानने की एक सूक्ष्म कला है। इन फिल्मों की विफलता ने ही अक्सर सिनेमा को नई दिशा दी है और फिल्मकारों को अपनी रणनीति बदलने पर मजबूर किया है। इसलिए, जब भी हम हिंदी फिल्म इतिहास की गौरवाण्ठा लिखें, तो इन असफलताओं को भी वही स्थान मिलना चाहिए, क्योंकि इन्होंने गिरती हुई इमारतों के मलबे पर आज की समझदार और यथार्थवादी फिल्मों की नींव खड़ी है। सफलता अगर मौजिल होती है तो फ्लॉप फिल्मों ने मील के पथर हैं जो बताते हैं कि किधर नहीं मुड़ना है। अंततः, सिनेमा के इस महासागर में लहरें वही ऊंची उठती हैं जिनकी गहराई में एक सच्ची और सशक्त कहानी छिपी होती है।

—hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

किसी और जानवर से ज्यादा चर्चित हुए सिनेमाई शेर



अशोक जोशी

शेर न केवल जंगल का राजा है, बल्कि भारतीय समाज का एक प्रमुख प्राणी भी है जिसे राष्ट्रीय प्राणी का दर्जा प्राप्त हुआ है। फिल्मों में तो शेर का उल्लेख मिलता ही है लेकिन स्टंट फिल्मों में भी नायकों



को शेर से दो-दो हाथ करते दिखाया गया है। 1954 में जब स्टंट फिल्मों का दौर था जॉन कावस, भगवान और दलपत अभिनीत फिल्म 'शेर दिल' आयी थी। इस फिल्म में तब के ही मेन जॉन कावस को ज़िंदा शेर से लड़ते दिखाया गया था। इस दृश्य की इतनी ज्यादा चर्चा हुई थी कि तब लोग केवल शेर से जॉन कावस की फाइटिंग देखने ही सिनेमाघरों में जाते थे। यह टाइल

भा रतीय के पौराणिक और ऐतिहासिक काल में भी शेर का उल्लेख मिलता है। शकुंतला और दुष्यंत के पुत्र भरत जिनके नाम से हमारे देश का नाम भारत रखा गया है वह भी बचपन से ही शावकों से खेलता रहा है। बौद्ध काल में बनाए गए हमारे स्तूपों में शेर को उकेरा गया है जिसकी प्रतिकृति नए संसद भवन में स्थापित की गई है जो हमारे शौर्य का प्रतीक है। शेर को लेकर समाज में कई तरह के मुहावरे कई तरह की उपमाएं और कई तरह के कहानी किस्से प्रचलित हैं। कुल मिलाकर हमारे समाज और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है शेर। यही कारण है कि हिन्दी सिनेमा में भी कहीं कहीं इसके दर्शन होते आए हैं।

हमारे कुछ कलाकारों को हिन्दी सिनेमा का शेर कहा जाता है। उनमें से ही एक हैं सोहराब मोदी जिनकी निर्माण संस्था मिनर्वा मूवीटोन का प्रतीक चिन्ह ही दहाड़ता हुआ शेर है। उन्हीं की फिल्म सिकंदर में जब विदेशी आक्रांता सिकन्दर के सामने पौरस बने सोहराब मोदी अपनी खास पारसी स्टाइल में कहते हैं 'युद्ध में तो बकरियाँ आती हैं शेर तो अकेला ही आता है और अकेला ही राज करता है तो सिनेमाघर तालियों की गड़गड़ाहट से गुंज जाया करता था। संवादों की अदायगी में सोहराब मोदी वाकई किसी शेर से कम नहीं थे। उनके बाद पृथ्वीराज कपूर और फिर राजकुमार ने परदे पर अपनी सिंह गर्जना से कई बरसों तक सिने जगत पर राज किया।

पौराणिक तथा ऐतिहासिक फिल्मों में तो शेर का उल्लेख मिलता ही है लेकिन स्टंट फिल्मों में भी नायकों को शेर से दो-दो हाथ करते दिखाया गया है। 1954 में जब स्टंट फिल्मों का दौर था जॉन कावस, भगवान और दलपत अभिनीत फिल्म 'शेर दिल' आयी थी। इस फिल्म में तब के ही मेन जॉन कावस को ज़िंदा शेर से लड़ते दिखाया गया था। इस दृश्य की इतनी ज्यादा चर्चा हुई थी कि तब लोग केवल शेर से जॉन कावस की फाइटिंग देखने ही सिनेमाघरों में जाते थे। यह टाइल



इतना मशहूर हुआ था कि 'शेर दिल' नाम से कई फिल्में बनीं। 1965 में पिकी फिल्मस के बैनर तले शेर दिल का निर्माण हुआ था। इस फिल्म के 'शेर दिल' थे दारा सिंह। फिल्म में उनके साथ परवीन चौधरी, जयंत, रंधावा, उमाकांत और भगवान की प्रमुख भूमिका थी। यह फिल्म राजघराने के षड्यंत्रों पर आधारित थी। फिल्म में दारा सिंह का शेर से मुकाबला दिखाया गया था जिसे देखकर राजकुमारी परवीन चौधरी उनकी ओर आकर्षित हो जाती हैं। फिल्म का निर्देशन चांद ने किया था और संगीत सी.रामचंद्र जैसे महान संगीतकार ने दिया था।

हिंदी सिनेमा के जाने माने निर्मात जगदीश सदान ने 1990 में धर्मेन्द्र, ऋषि कपूर, प्रदीप कुमार, रोहिणी हंटांडी, गुलशन ग्रोवर, कादरखान, अनिता राज और किमी काटकर को लेकर 'शेरदिल' का निर्माण किया था। फिल्म का निर्देशन मोहन सहगल ने किया था और इसके संगीतकार थे लक्ष्मीकांत प्यारेलाल। फिल्म का नायक अपराध की दुनिया का शेर है जो शेर के नाम से अपराध करता है। इसके पहले मोहन सहगल वन्य जीवन पर आधारित अपनी फिल्म कर्तव्य में धर्मेन्द्र को फारेस्ट ऑफिसर के रूप में शेर से भिड़ते दिखा चुके हैं। हिन्दी फिल्मों के हीमन धर्मेन्द्र फिल्म 'मां' में हेमा



मालिनी को बचाने के खातिर शेर से भिड़े हैं, तो 'धर्मवीर' में धर्मंडी राजकुमारी जीनत अमान के गुप्से का शिकार होकर शेर से दो दो हाथ करते दिखाई दिए। गुरुदत्त फिल्मस की 'शिकार' में भी धर्मेन्द्र घायल शेर का शिकार करने जाते हैं। राजकपूर की फिल्म 'बॉबी' के लोकप्रिय गीत हम तुम एक कपड़े में बंद हो के एक अंतरे में हम तुम एक जंगल में गुजरें और शेर आ जाएं, जिसने सारंगती परंपराओं और खानदानों की संस्था की उस पुरानी सड़ने-गली कहानी को पेश किया जिसे दर्शक दशक भर पहले ही छोड़ चुके थे।



तो सिनेमा हाल में बैठे दर्शक शेर को भूलकर डिम्पल के शरीर को लार टपकते देखने लगते थे और सिनेमा हॉल तालियों से गुंज जाता था।

सात के दशक में बनने वाली स्टंट फिल्मों में जंगल से जुड़ी कहानियों पर बनने वाली फिल्मों में टार्जन पर आधारित जितनी भी फिल्में बनीं, उनमें ज्यादातर फिल्मों में आजाद ने टार्जन की भूमिका निभाई है। उसके बाद टार्जन कम्प टू देहली में दारा सिंह टार्जन बने थे। और 1985 में हेमंत बिरजे और किमी काटकर की फिल्म आयी थी एडवेंचर्स ऑफ टार्जन। इन सभी फिल्मों में टार्जन को शेर से लड़ते दिखाया गया था। मीना कुमारी और सुनील दत्त की फिल्म 'मैं कपूर रहूँगी' में एक बाल नाटिका दिखाई गई थी जो चतुर खरगोश और दुष्ट शेर पर आधारित थी। इसके अलावा राजकपूर की फिल्म 'मेरा नाम जोकर' के एक दृश्य में राजकपूर गलती से शेर के पिंजरे में घुस जाते हैं तब रिंग मास्टर दारासिंह आकर उसे बचाते हैं।

शेर से ही मिलते जुलते शीफक पर बनी थी हिन्दी फिल्म 'शेरा' जो 1975 में प्रदर्शित हुई थी। फिल्म में कबीर बेदी और योगिता बाली की मुख्य भूमिका थी। बाद में 1999 में भी 'शेरा' फिल्म का निर्माण दर्शक भारत में हुआ था जिसमें मिथुन चक्रवर्ती के साथ

गुलशन ग्रोवर, रामी रेड्डी, दीपक शिर्के ने अभिनय किया था। फिल्म का निर्देशन टीएलवी प्रसाद ने किया था। फिल्म का नायक जय एक सीधा साधा ईमान है जो झा माफिया द्वारा अपनी बहन की हत्या का बदला लेने के लिए शेर बन जाता है।

1990 में राज बब्बर, सोनम और कबीर बेदी ने 'शेरा शमशेरा' ने काम किया था। फिल्म का निर्देशन एसआर प्रसाद ने किया था। फिल्म का जंगल के शेर से कोई नाता नहीं था। हिंदी फिल्म 'बेताज बादशाह' में राजकुमार शेर पालते हैं तो उनकी बेटी ममता कुलकर्णी के बच्चे को लेकर कॉलेज जाती है। हिन्दी फिल्म सूरज में भी अजीत को शेर को सहलाने दिखाया होगा। इसके अलावा छलिया, जजीर और 'खुदा गवाह' के पात्र शेर खान बहुत चर्चित रहे हैं। कहने को तो हिन्दी फिल्म बनी थी 'नरसिंह' जिसका शेर से कोई लेना देना नहीं था। शेर की तरह ही शेरनी ने भी हिन्दी सिनेमा में दस्तक दी है। 1988 में हमेशा मल्लोत्र के निर्देशन में बनी 'शेरनी की शेरनी' थी हिन्दी फिल्मों की स्टार नायिका श्री देवी। फिल्म की नायिका दुर्गा एक गांव की सीधी सादी लडकी है जो ठाकुर द्वारा अपने परिवार की हत्या का बदला लेने के लिए बंदूक उठाकर शेरनी बन जाती है। पिछले साल कारगिल युद्ध के हीरो विक्रम बत्रा की बहादुरी पर बनी फिल्म का शीफक था शेर शाह जो हमारे सैनिकों के शेर जैसे बुलंद हौंसलों को बताती है।

शेर की पृष्ठभूमि पर बनी सबसे प्रभावी फिल्म है फंज कपूर की फिल्म 'शेर दिल' जो पोलिथीट टाइगर रिजर्व की सच्ची घटनाओं पर आधारित है जहाँ लोग अपने गांव के लोग अपने परिवार के वृद्धजनों को शेर का शिकार बनने के लिए छोड़ जाते हैं और शेर द्वारा उनका शिकार किए जाने के बाद प्रशासन से मुआवजे का दावा करते हैं। जब से फिल्मों में वीएफएफआर और एआई का दौर आया है, शेर भी वास्तविक कम और शेर की पदवी हासिल ईमानों की तरह बनवटी ही दिखाई देने लगे हैं।

हार की जीत... या जीत की हार !

उपफु ये समाज और इसकी

सामयिक

प्रकाश पुरोहित

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।



भा | जपा, मोदी, शाह के भले में रहेगा कि ममता बनर्जी फिर बंगाल जीत जाएं। जीत गई तो बंगाल तक रहेंगी और हरा दिया तो... फिर दिल्ली दूर नहीं। फिर तो छत्ती पर मूं दलने से रोका नहीं जा सकता। कहा जा रहा है कि इस

बार बंगाल में भाजपा का उतना जोर नहीं है, जितना पिछले चुनाव में था। मैं भी इससे सहमत हूँ। वजह यही है कि जब मैं सोच सकता हूँ तो भाजपा के थिंक- टैंक तो समझ ही चुके होंगे। मराठी में चर्चित वाक्य है- 'सिंह आला अणि गह गेला।' यह सभी जगह लागू होता है। कोई नहीं चाहता कि 'रोजे उलवाने जाएं और नमाज गले पड़ जाए' या 'लेने गई पूत और खो आई भतीर।' आधे के लिए कोई पूरा जोखिम में कैसे डाल सकता है भला !

अभी 'इंडिया' (यानी भारत नहीं... गठबंधन) में ऐसा कोई चेहरा नहीं है, जो मोदी के मुकाबले खड़ा किया जा सके। साऊथ में है कुछ मुख्यमंत्री (जैसे स्टालिन), लेकिन उनकी फकड़शेष भारत पर नहीं है, जैसे कि मोदी या भाजपा की साऊथ में नहीं है। अब साऊथ जीतने के लिए कोई बाकी भारत खोने की शर्त रख दे तो कौन तैयार होगा, मोदी-शाह भी नहीं। अपने-अपने इलाके हो गए हैं और कोशिश यही रहती है कि दूसरे के खेत में मूंह मारा जाए !

वैसे तो बिहार में ही कौन-सा भाजपा का राज था। नीतीश कुमार सांसद बना दिए गए तो दलबदल विधायक को मुख्यमंत्री बनाने का मौका भाजपा को मिल गया। खालिस भाजपाई को तो नीतीश कुमार भी बदरत नहीं करते कि अगली बार पता ही साफ हो जाएगा। पूर्व कांग्रेसी या समाजवादी हैं तो कुछ तो लाज, शर्म या समझ बची होगी। नीतीश की तरह कभी भी पलटी मार सकता है। ये नीतीश का भरोसा रहा होगा तो भाजपा का जोखिम।

यह सोचने लायक यह है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़ने के बाद सांसद हो जाने के पीछे कहीं नीतीश कुमार को कोई चाल तो नहीं है। इतने बरस सीएम रहकर भाजपा का बाल बांका नहीं कर सके, बल्कि अपनी ही खांकरें करवाते रहे और हासिल क्या हुआ तो सिंगड़ा ! इतने बरस मुख्यमंत्री रहते कोई भी बोर हो सकता है, तो मन बहलाने के लिए तो सांसद बने नहीं होंगे।

अपने हाथ से कोई अपना डिमोशन कैसे कर सकता है ! यदि यह अनुमान है कि मोदी आने पर नीतीश कुमार को मोदी की जगह प्रधानमंत्री बनाया जा सकता है... तो यह चंडूखाने की अफवाह नहीं है, क्योंकि एनडीए में आम सहमति के लिए कोई गैर-भाजपाई नाम ही चाहिए। नीतीश सिर्फ दिल्ली दर्शन को तो गए नहीं हैं और ना ही उन्हें राष्ट्रपति ही बनना है कि अभी फजीहत देख ही रहे हैं। लड़के से चमत्कार की उम्मीद नहीं है। ज्यादा से ज्यादा डिटी सीएम ही बन सकता था, वो भी नहीं बन पाया। तो यह कहना भी गलत है कि लड़के को रोजगार से लगाने के लिए नीतीश ने कुर्सी छोड़ दी है।

हां, तो बात हो रही थी बंगाल की। भाजपा यदि इस बार जीत गई तो...? यकीन मानिए आफत ही मोल लेने वाली है कि तब ममता सिर्फ बंगाल तक तो नहीं रहने वाली हैं, तब उन्हें दिल्ली नजदीक नजर आने लगेगी, क्योंकि इस समय 'इंडिया' में ममता से दमदार और सर्वसम्मत चेहरा दूसरा नहीं है। राहुल भी मोदी-शाह से हंस कर मिल लेते हैं, लेकिन ममता ही है, जो फूटी आंख भी देखना नहीं चाहती है। चुनाव आयोग और केंद्र सरकार को चक्राधिनी बना रखा है। डरती किसी से नहीं, डरती ही रहती है। छवि पर कोई दाग नहीं है और सादा जीवन सभी के सामने है कि अपने ही घर में रहती हैं और जब-तब सड़क पर उतर आती हैं। दिन में चार बार साड़ी भी नहीं बदलती !

अब कल्पना कीजिए कि बंगाल चुनाव हार गई ममता... तो आगे क्या? सांसद बनकर सीधे दिल्ली का रुख करेंगी और सरकार की नाक में दम कर देंगी, एक दिन मोदी- शाह को चैन से नहीं हंसने-बोलने देंगी। मुख्यमंत्री की कुर्सी खो कर यदि प्रधानमंत्री की मिलती है तो बुरा क्या है। भाजपा भी यह जानती है कि ममता को दिल्ली से जितना दूर रखा जाए, उतनी ही अपनी खैर ! अब ममता को चुनाव में हरा कर

तो दिल्ली जाने से नहीं रोका जा सकता, तो यही बेहतर नहीं होगा कि उन्हें मुख्यमंत्री बना रहने दिया जाए ताकि दिल्ली में अमन-चैन रहे ! यह बात आम नहीं है, लेकिन क्या ऐसा संभव नहीं है? जब शिवराजसिंह के पर निकलने लगे तो उन्हें केंद्र में मंत्री बना कर जमीन पर ले आए, देखिए आजकल कितनी उकुर-सुहाति करते नजर आते हैं। रमन सिंह के तो पते ही नहीं हैं, हर्षवर्धन, रविशंकर प्रसाद, स्मृति इरानी कहां गए ! ये तो अपने वालों को निपटाने का तरीका था, लेकिन विपक्ष को तो अलग ढंग से ही टिकाने लगाया जा सकता है ना, इसलिए मुझे लगता है कि इस बार भी बंगाल में ममता ही जीत जाएंगी, क्योंकि भाजपा अपनी जीत के जरिए कब खोदने का ठेका ममता को नहीं देगी। क्या सोचते हैं आप, बताइएगा !



...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।



आजकल समाज को कोसेने का एक टूट चुका पड़ा है खुब। यू ट्यूब, इंस्टा, फेसबुक पर ऐसे गीत, कवितायें, विचार आ रहे हैं जिसमें ये दर्शाया जा रहा है कि समाज की परवाह ना करें। अपनी मर्जी का जीवन जियें। क्या हमने समाज को इतने अधिकार दिये हुये हैं कि वो हमारी पसंद, नापसंद, हमारे कपड़े पहनने, शादी, प्रेम, परिवार, मृत्यु के नियम तय करें।

चलिये पहले बात करते हैं समाज है क्या और उसके अंतर्गत क्या अनिवार्य विषय आते हैं। क्या हमने समाज के अंतर्गत आने वाले सभी नियमों को निभाया और क्यों निभायें? ये नियम बनाने वाले कौन हैं?

समाज जीवन का अनिवार्य अंग है। जो अलग-अलग विचार धाराओं वाले व्यक्तियों के समूह से बनता है यह हमें सुरक्षा, सहयोग, विकास प्रदान करता है। मूलतः समाज अमानवीय व्यवहार, अनियमितताओं, रीति-रिवाजों पर कंट्रोल करने के लिये बहुत उपयोगी है, परंतु कई बार रूढ़िवादियों से घिरे लोग इसका दुरुपयोग करते हैं जैसे हरियाणा तरु खाप पंचायत, गांवों में डायन, चुडैल जैसी प्रथाओं का चलना, प्रेम विवाह के चलते जाति से बाहर कर देना।

कुछ समय से हम देख रहे हैं कि हर व्यक्ति समाज हो रहा है और समाज में जातिवाद का प्रवेश हो चला। हर जाति का एक समाज है उसके कट्टर नियम हैं जिन्हें अक्सर मध्यमवर्गीय समूह ज्यादा भुगतते हैं उच्चवर्गीय या निम्नवर्गीय ज्यादातर परंपराओं का पालन नहीं करते मसलन विवाहोत्तर संबंध 2-3 पत्नी, पैसों के लिये अपराध करना।

युवा पीढ़ी हमें सिखाती है कि आप ऐसे समाज की परवाह क्यों करते हैं जो आपकी परेशानियाँ बढ़ाता है।

बहुत वर्षों पहले हम हिप्पी संस्कृति को हिकारत से देखते थे, हरे कृष्णा हरे राम मूवी में जीनत अमान जब गाती थी दुनिया ने हमको दिया क्या तो युवा पीढ़ी के भीतर बागी तेवर पनप जाते थे।

चलिये समाज के फायदे देखें तो इससे पता चला है हम उच्चश्रृंखला से बचे रहते हैं, लोगों का डर रहता है, गलत काम खुल के नहीं होते, परिवार सड़क पर नहीं लड़ता, लोग कानून हाथ में लेने से डरते हैं। विवाह परंपरा पर अभी भी विश्वास करते हैं। मृत्यु के सारे कर्मकांड में समाज की विशेष भूमिका है अचरछ ये प्रक्रिया परिवर्तनशील रहती है। समाज में कहा तो

समाज में व्यक्त कुरीतियाँ (सामाजिक रूढ़ियाँ) अज्ञानता, अंधविश्वास और संकीर्ण मानसिकता के चलते हानिकारक प्रथायें हैं जैसे दहेजप्रथा, बाल विवाह, जातिवाद, कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, और अंधविश्वास शामिल है। लिंग भेद में अक्सर महिलाओं के साथ उत्पीड़न होता है। जाति के आधार पर बढ़ता प्रभाव राजनीति में वोट का मुद्दा बन रहा है। सुविधा व धन के अभाव के चलते आरक्षण ना होकर माना जाता है विशेष जाति अक्षम है इसलिये उसे ही सुविधा मिले जिससे आम वर्ग में असंतोष है। धर्म राजनीति में और राजनीति धर्म में घुसती चली जा रही है। दायरों ने दम तोड़ दिया। शिक्षा के साथ भी छुआ छूत है। समाज नियम तय करता है किस जाति का व्यक्ति मंदिर, मस्जिद में प्रवेश करें। एक समाज में एकल विवाह, एक समाज में बहु विवाह प्रथा है। जादू टोना, पशु बलि बरकरार है।

इस परेशानी से बचने के लिये एक वर्ग ने अभियान चलाया है। जिसमें अहम उपाय शिक्षा है (परंतु मैंने शिक्षित लोगों में भी रूढ़िवाद देखा है) बहुओं के लिये पर्दा प्रथा, नौकरी ना करना शिक्षित समाज का अभिन्न अंग है। कानून है, पर पालन के लिये कोई देखभाल करने वाला नहीं है। कुरीतियाँ दूर करने के लिये कैंप लगाये जा रहे हैं। जागरूकता अभियान चल रहे हैं परंतु अभी भी लड़की से पहले लड़के की चाह है दिलों में। कितना भी धन हो पर दहेज का लालच है। सबसे अहम चीज है मानसिकता का बदलाव। युवा पीढ़ी, लिब्डन के जरिये बंधनों का विरोध करती है। माँ-बाप की अवज्ञा, घर के रीति रिवाजों को ना मानना अपनी आजादी का प्रतीक मानती है। हमारे समाज में माँ-बाप, बड़ों के आदर की परंपरा है जो आज बिखर रही है। वृद्धों की उपेक्षा समाज के नियमों की उपेक्षा है। पुराने समय में बुजुर्गों के शब्दों की कीमत होती थी। मैं ये नहीं कहती तानाशाही सहन करो परंतु थोड़े धैर्यवान और नम्र बनों आप को समाज की जो कुरीतियाँ पसंद नहीं उनका विरोध करो जो सही लगे उनको स्वीकार करो क्योंकि आप ही समाज हैं चाहे आप उसमें परोक्ष रूप से भाग ना लेते हों, ना मानते हो समाज को, पर आप समाज हैं तो क्यों ना समाज में रहकर उसकी कुरीतियों का विरोध कर पूछते रहें एक दूसरे से और क्या कह रही है जिंदगी।

क्या कह रही है जिन्दगी



यही जाता है सबके लिये बराबर के नियम हैं। ये एक ऐसा संगठन है जहाँ अपरोक्ष रूप से व्यक्ति एक दूसरे से जुड़ा रहता है। अब इसमें भी विरोधाभास है कोई जरूरी नहीं अच्छे परंपराओं का वहन ही समाज की विशेषता रही होगी।

अब समाज के कारण जो उपद्रव फैला है और कुछ लोग लोग क?या कहेंगे सोच के ही जी रहे हैं वे इसका शिकार हैं।

विडंबना

इतिहास हो गया ऐसे कलाकार

बंसीलाल परमार

2 जनवरी 2014 को प्रीतमलाल दुआ आर्ट गैलरी इंदौर में परछाई नाम से रूप एक्जीबिशन थी मेरे चार चित्र थे उसमें। चाय पीने के लिये रोड़ के सामने ही चाय की टपरी थी वहां आया चाय की दुकान के पास ये बुजुर्ग पेंटर साहब मिले जो अरविंद केजरीवाल जो उस समय अन्ना आंदोलन से उभरे थे अखबार में उनके चित्र पर ग्राफ डालकर पोर्ट्रेट बनाने तैयारी कर रहे थे।

उसने बातचीत हुई। वे पास है अपनी कच्ची सी वर्कशॉप में ले गये। इसी क्षेत्र रीगल टाकीज हुआ करता था वे अतीत में खो गये जब पेंटर का दर्जा स्टार से कम नहीं था लोग उनके हुनर की कद्र करते ,टाकिज में फिल्म लगने से पहले इनकी सेवाएं महत्वपूर्ण थी ,सभी जगह लगाये जाने वाले पोस्टर ये लोग ही बनाते थे। इनके काम करते देखकर लोग कौतुहल से इकट्ठे हो जाते थे काम के लिये ये हेल्पर भी रखते थे बहुत स्वर्णिम समय था इनका बारह महीने काम मिलता था बहुत सी बार फुटरक काम लौटाना पड़ता था पुरी जवानी इसी व्यस्तता में गुजरी चुनाव का काम तो इनके व्यवसाय का कुंभमेला था खुशहाल जिंदगी कट रही थी। भाविष्य बदलल होगा सोचा नहीं। कंप्यूटर और टेक्नोलोजी ने प्रवेश किया फ्लेक्स और बड़े बड़े कट आउट मशीनों से बनने लगे और ये खारिज होते गये। मैंने इनका एक काज पर साक्षात्कार भी लिया था पर वह गुमशुदगी में चला गया इनकी वर्कशॉप कुछ पोर्ट्रेट बने थे।



उप संचालक जनसंपर्क सुनील वर्मा तथा सहायक संचालक जनसंपर्क सुश्री निहारिका मीना, हिमांशी बजाज को मिलेगा लोक संपर्क सम्मान

भोपाल। राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस पर पीआरएसआई भोपाल द्वारा 26 अप्रैल को सीएमई हॉल एलएनसीटी यूनिवर्सिटी परिसर में किया जाएगा सम्मानित, 07 महिला पत्रकारों को मिलेगा अचला एवं उदिता अवाडी।

पब्लिक रिलेशंस सोसायटी ऑफ इंडिया के भोपाल चैप्टर द्वारा 26 अप्रैल को आयोजित किये जाने वाले राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस के कार्यक्रम में जनसंपर्क विभाग के उप संचालक श्री सुनील वर्मा, सहायक संचालक सुश्री निहारिका मीना, सहायक संचालक सुश्री हिमांशी बजाज, वरिष्ठ आंचलिक पत्रकार श्री मुन्ना लाल मिश्रा एवं चौधरी चरन सिंह यूनिवर्सिटी मेरठ की रिसर्च एसोसिएट डॉ. बीमन यादव को लोक संपर्क

सम्मान से सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान सीएमई हॉल (जे.के.हॉस्पिटल), एलएनसीटी यूनिवर्सिटी परिसर में प्रातः 10.30 बजे से आयोजित होने वाले कार्यक्रम में प्रदान किया जाएगा।

पीआरएसआई भोपाल चैप्टर के अध्यक्ष श्री मनोज द्विवेदी ने बताया है कि राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में 'जनसंपर्क-लोकतंत्र का पाँचवा स्तंभ' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया जाएगा। पीआरएसआई भोपाल चैप्टर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस के कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के पत्रकारिता मीडिया, टी.वी. मीडिया और कॉर्पोरेट मीडिया में कार्यरत महिला पत्रकारों, टी.वी. एंकरों को अचला और उदिता सम्मान से सम्मानित किया

जाएगा। कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक श्री गिरिजा शंकर, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. उर्मिला शिरीष एवं कुलगुरू (वाइस चांसलर) एलएनसीटी यूनिवर्सिटी डॉ. नरेन्द्र कुमार थापक विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

इन्हें मिलेगा अचला-उदिता सम्मान-श्रीमती योजना लाडू, सुश्री निधि परमार, सुश्री ऋषिता तोमर, सुश्री कोपल बरखाने, सुश्री साक्षी त्रिपाठी, सुश्री राशि श्रीवास्तव एवं सुश्री दीप्ति तोमर। गौरतलब है कि पब्लिक रिलेशंस सोसायटी ऑफ इंडिया जनसंपर्क एवं संचार के क्षेत्र में विभिन्न संगठनों में कार्य करने वाले प्रोफेशनल्स की 70 वर्ष पुरानी एक राष्ट्रीय स्तर की संस्था है। इस संस्था के पूरे देश में लगभग 27 चैप्टर कार्यरत हैं।

आमंत्रण

राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस - 2026

विशेष व्याख्यान एवं सम्मान समारोह

अतिथिगण

श्री गिरिजा शंकर
वरिष्ठ पत्रकार एवं
राजनीतिक विश्लेषक, भोपाल

डॉ. उर्मिला शिरीष
प्रख्यात साहित्यकार
भोपाल

डॉ. नरेन्द्र कुमार थापक
कुलगुरू (वाइस चांसलर)
एल.एन.सी.टी. यूनिवर्सिटी, भोपाल

विशेष व्याख्यान

जनसंपर्क- लोकतंत्र का पाँचवा स्तंभ

रविवार, 26 अप्रैल 2026 | प्रातः 11:00 बजे
सी.एम.ई. हॉल, जे.के. हॉस्पिटल, भोपाल
आप सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक

के.के. शुक्ला
कोषाध्यक्ष

पंकज मिश्रा
सचिव

मनोज द्विवेदी
अध्यक्ष

पब्लिक रिलेशंस सोसायटी ऑफ इंडिया, भोपाल